भारत के माननीय
उपराष्ट्रपति
चित्रलेखा

चित्रलेखा

मुख्य संरक्षक
डॉ. संजय बिहारी, निदेशक
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

संपादक
डॉ. कमलेश के. गुलिया, वैज्ञानिक जी
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

संपादकीय
डॉ. संतोष कुमार बी, कुलसचिव
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

फोटोग्राफी
श्री लिजिकुमार जी. वैज्ञानिक अधिकारी, चिकित्सा चित्रण
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

रूपांकन
डॉ. डिंपल गोपी, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं दस्तावेज़ीकरण अधिकारी
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

हमारे संस्थान के बारे में

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम, भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान है, जिसे वर्ष 1980 में संसद के अधिनियम द्वारा "राष्ट्रीय महत्व का संस्थान" घोषित किया गया। यह संस्थान चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनूठे संगम का उदाहरण है, जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना, चिकित्सा उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का स्वदेशी विकास करना तथा जनस्वास्थ्य और चिकित्सा अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। संस्थान के तीन प्रमुख अंग हैं – अस्पताल शाखा, जो हृदय, छाती और तंत्रिका रोगों के उन्नत उपचार और शल्यक्रिया में विशेषज्ञता रखती है; बायोमेडिकल प्रौद्योगिकी शाखा, जो चिकित्सा उपकरणों, बायोमैटेरियल्स और विभिन्न इम्प्लांट्स के विकास एवं परीक्षण में अग्रणी है; तथा अच्युत मेनन स्वास्थ्य विज्ञान अध्ययन केंद्र, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान और शिक्षा में योगदान देता है। यह संस्थान जटिल न्यूरोसर्जरी, एपिलेप्सी सर्जरी, डीप ब्रेन स्टिमुलेशन, कार्डियक इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी जैसी उन्नत चिकित्सा तकनीकों के लिए विश्व स्तर पर पहचाना जाता है। साथ ही, यह जैव-संगतता परीक्षण, चिकित्सा उपकरण मानकीकरण और औद्योगिक सहयोग के माध्यम से भारत को स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्यरत है। इस प्रकार एससीटीआईएमएसटी एक ऐसा संस्थान है जो चिकित्सा उपचार, शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास – इन चारों क्षेत्रों में उत्कृष्टता का प्रतीक है।

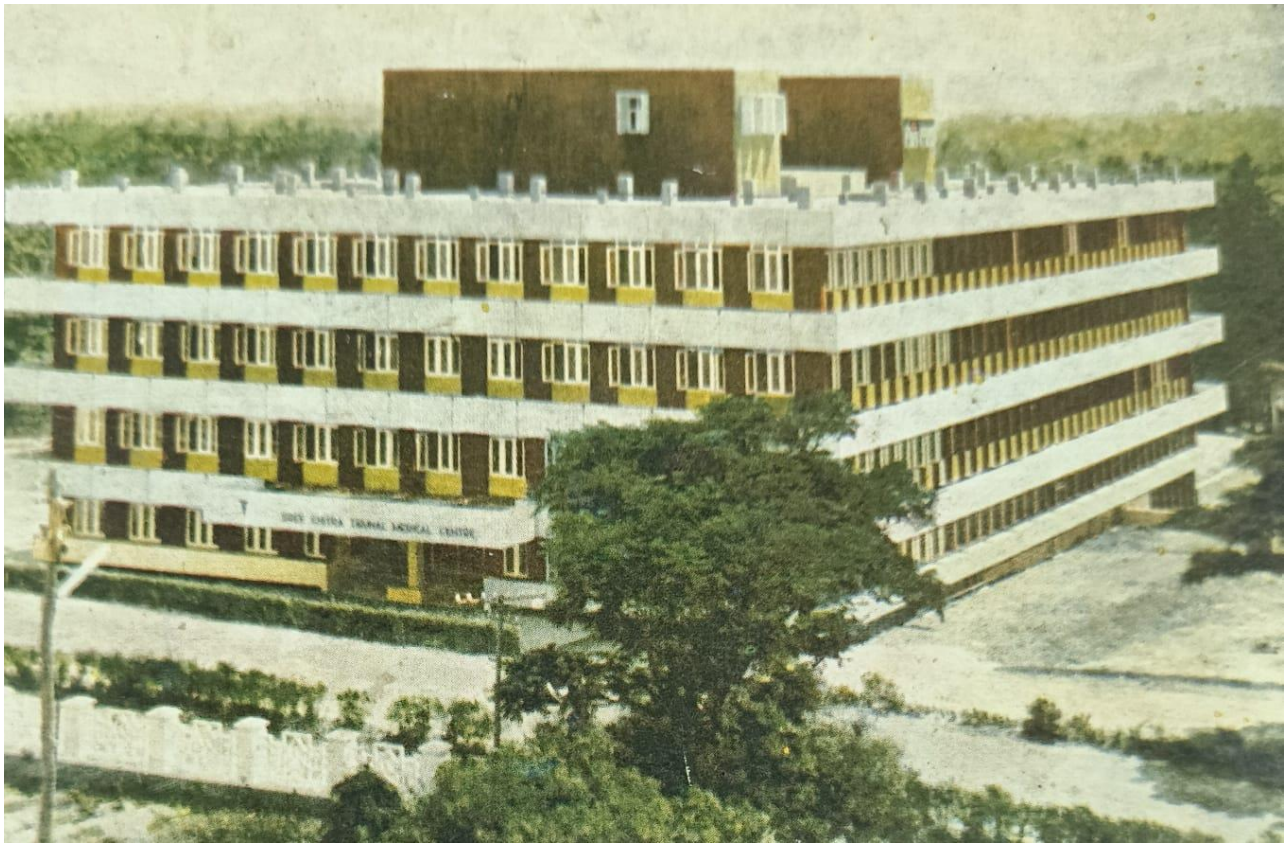

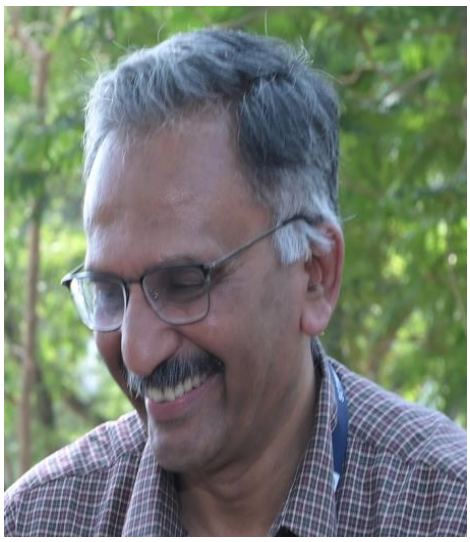

हमारे निदेशक का संदेश

पत्रिका लगातार रचनात्मक अभिव्यक्ति, संचार और संस्थागत प्रतिबिंब के लिए एक जीवंत मंच के रूप में विकसित हुई है। मुझे विशेष रूप से यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि संपादकीय बोर्ड हर साल दो अंक निकाल रहा है, और दोनों संस्करण उत्कृष्ट रिपोर्टों, मनोरम तस्वीरों और सराहनीय साहित्यिक योगदानों से समृद्ध हैं।

एससीटीआईएमएसटी में आयोजित विभिन्न घटनाओं, शैक्षणिक कार्यक्रमों, वैज्ञानिक गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यों को हिंदी में प्रलेखित करने और उनका अनुवाद करने और उन्हें पत्रिका में प्रस्तुत करने का लगातार प्रयास वास्तव में सराहनीय है। यह पहल न केवल हिंदी पाठकों के लिए पहुंच को व्यापक बनाती है, बल्कि संस्थागत संचार में राजभाषा को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को भी मजबूत करती है।

मैं विशेष रूप से हमारे कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा की सराहना करना चाहूंगा। कर्मचारियों द्वारा दिए गए कविताएँ, लघु कथाएँ, चिंतनशील निबंध और विशेष रूप से यात्रा वृत्तांत अपनी रचनात्मकता और गहराई में उल्लेखनीय हैं। विशेष रूप से यात्रा रिपोर्ट व्यक्तिगत अनुभवों और सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि को खूबसूरती से दर्शाती हैं, जिससे वे आकर्षक और प्रेरणादायक बन जाती हैं। इस तरह के योगदान वास्तव में विशेष प्रशंसा के योग्य हैं।

मैं संपादकीय बोर्ड को उनके समर्पण, दूरदृष्टि और हर साल दो उच्च गुणवत्ता वाले खंड लाने के लिए कड़ी मेहनत के लिए बधाई देता हूं। मैं सभी कर्मचारियों को भी प्रोत्साहित करता हूं कि वे अपनी रचनात्मक और बौद्धिक गतिविधियों को साझा करना जारी रखें, जिससे "चित्रलेखा" के भविष्य के संस्करण समृद्ध हों ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका आने वाले वर्षों में हमारी संस्थागत उपलब्धियों के दर्पण और साहित्यिक उत्कृष्टता के लिए एक सार्थक मंच के रूप में काम करना जारी रखेगी।

शुभकामनाओं के साथ,

निर्देशक

प्रमुख, बी.एम.टी. स्कंध का मंगल संदेश

चित्रलेखा" के नवीन अंक के प्रकाशन पर मैं समस्त संपादकीय मंडल एवं हिंदी प्रकोष्ठ को हार्दिक बधाई देता हूँ। श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान की यह पत्रिका संस्थान की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों तथा सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का एक उत्कृष्ट मंच है।

यह अंक जुलाई से दिसंबर की अवधि में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों का समग्र परिचय प्रस्तुत करता है। साथ ही इसमें निबंध, लेख, चित्रकला, पेंटिंग, शिल्पकला तथा थ्रेड वर्क डिज़ाइनों के माध्यम से कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की रचनात्मक प्रतिभा का सराहनीय प्रदर्शन किया गया है।

इस अंक में केरल की प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य-नाट्य कला कथकली पर चित्रों सहित एक ज्ञानवर्धक लेख भी सम्मिलित है, जो हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है।

संस्थान के प्रतिष्ठित सदस्य स्वर्गीय डॉ. मोहनदास को इस अंक में दी गई श्रद्धांजलि अत्यंत भावपूर्ण एवं प्रेरणादायक है। इसके अतिरिक्त, हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पुरस्कार विजेताओं के चित्र एवं उपलब्धियों को स्थान देकर इस पत्रिका को और भी प्रेरक बनाया गया है।

मुझे विश्वास है कि "चित्रलेखा" का यह अंक पाठकों के लिए उपयोगी एवं प्रेरणास्रोत सिद्ध होगा। इस उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु मैं हिंदी प्रकोष्ठ, संपादकीय मंडल तथा सभी सहयोगियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

जय हिंद ।

डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी. आर.

उप निदेशक की कलम से

हमारे संस्थान की आधिकारिक हिंदी पत्रिका 'चित्रलेखा' के लिए इस संदेश के माध्यम से अपने विचार साझा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है, जो अत्यंत प्रभावशाली बन चुकी है। यह पत्रिका संस्थान में हम सभी के उत्कृष्ट कार्य, प्रतिबद्धताओं, उपलब्धियों और आवाज़ का प्रतिनिधित्व करती है।

यह पत्रिका हिंदी भाषा के माध्यम से संस्थान की गतिविधियों को राष्ट्रव्यापी स्तर पर प्रसारित करती है। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि 'चित्रलेखा' ने 2025 के हिंदी भाषा पुरस्कार में पुरस्कार और प्रशंसा प्राप्त की है और मैं पत्रिका के संपादकों और योगदानकर्ताओं को बधाई देता हूं।

पिछले वर्ष संस्थान के लिए बहुत ही फलदायी रहा, जिसमें नव-उद्घाटित पीएमएसएसवाई ब्लॉक के माध्यम से रोगी देखभाल सेवाओं का विस्तार भी शामिल है। हमें खुशी है कि इस वर्ष भी हमारे संस्थान को नई सुविधा प्राप्त हुई है, क्योंकि माननीय प्रधानमंत्री ने रेडियोसर्जरी सुविधा की आधारशिला रखी है, जिससे केरल और आसपास के राज्यों के लाखों रोगियों को लाभ होगा, जिन्हें रेडियोसर्जरी प्रक्रिया के लिए दूर-दूर तक यात्रा करनी पड़ती थी।

हम एक सतत भविष्य के लिए 'सभी के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)' के लक्ष्य को प्राप्त करने की हमारी सरकार की दूरदृष्टि के साथ भविष्य की ओर अग्रसर हैं। चित्रलेखा के माध्यम से साझा की जाने वाली सामग्री सहित हमारी भावी संस्थागत गतिविधियाँ, भविष्य में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के स्वास्थ्य सेवा तथा दैनिक जीवन की गतिविधियों में एआई सुरक्षित उपयोग के महत्व के प्रति जन-जागरूकता पर केंद्रित हो सकती हैं।

मुझे एससीटीआईएमएसटी का हिस्सा बनकर खुशी हो रही है, जो 1976 में अपनी रोगी देखभाल सेवाओं की स्थापना के बाद से 2026 में स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जैसा कि इस पत्रिका में दर्शाया गया है, एससीटीआईएमएसटी जन स्वास्थ्य और शिक्षा गतिविधियों में देश में अग्रणी रहा है और 2026 में भी अपना अनुकरणीय कार्य जारी रखेगा।

जय हिंद ।

डॉ. एस. मणिकंदन

संकायाध्यक्ष की कलम से

आदरणीय पाठकगण,

मुझे यह कहते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों ने चित्रलेखा के इस भाग में बहुत ही अच्छा योगदान दिया है। इस संस्थान में हमने कई त्योहार मनाए। विशेष रूप से 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मैं आप सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ देता हूँ। हमें विश्वास है कि हम इस साल और भी ऊँचाइयों को प्राप्त करेंगे।

हमारे संस्थान का स्थापना दिवस फरवरी महीने के अंत में आता है। इस अवसर पर भी मैं आप सभी को स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। इसी के साथ राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी को मनाया जाता है। आप सभी को इसमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

मैं अपनी ओर से और अपने विभाग की ओर से सभी सहयोगकर्ताओं का हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ। चित्रलेखा की टीम तथा अन्य सभी सदस्यों का भी धन्यवाद करता हूँ।

जय हिंद।

डॉ. श्रीनिवासन के

कुलसचिव की कलम से

चित्रलेखा के लिए अपनी हार्दिक सराहना साझा करना एक सौभाग्य की बात है, जो एक जीवंत मंच है जो रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और सामुदायिक भावना को खूबसूरती से दर्शाता है। पत्रिका एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करती है जहां विचार पनपते हैं और आवाज़ें हिंदी में सार्थक अभिव्यक्ति पाती हैं।

चित्रलेखा ने श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों का विचारपूर्वक दस्तावेजीकरण किया है, जिसमें संस्थान की ऊर्जा, उपलब्धियों और सहयोगात्मक भावना को दर्शाया गया है। विस्तृत रिपोर्टों और आकर्षक आख्यानों के माध्यम से, पाठक महत्वपूर्ण अवसरों, शैक्षणिक उपलब्धियाँ, सांस्कृतिक समारोहों और संस्थागत समारोहों को पुनः अनुभव कर सकते हैं। ये रिपोर्टें न केवल जानकारी प्रदान करती हैं, बल्कि हमारे अपनेपन की भावना को भी मजबूत करती हैं।

इस के अलावा, पत्रिका यात्रा रिपोर्टों को प्रदर्शित करती है जो पाठकों को विविध स्थानों और अनुभवों तक ले जाती है। ये विवरण दृष्टिकोणों को व्यापक बनाते हैं और विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों और परंपराओं के बारे में जिज्ञासा को प्रेरित करते हैं। इसके अतिरिक्त, कर्मचारियों के साहित्यिक योगदान - कविताओं, लघु कथाओं, निबंधों और प्रतिबिंबों सहित - प्रत्येक संस्करण में गहराई और समृद्धि जोड़ते हैं। इस तरह की रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ एससीटीआईएमएसटी समुदाय के भीतर अपार प्रतिभा को उजागर करती हैं।

चित्रलेखा को जो बात सचमुच खास बनाती है, वह यह है कि यह सिर्फ एक प्रकाशन से कहीं अधिक है; यह हिंदी में हमारे विचारों को व्यक्त करने के लिए एक साझा मंच है। यह भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, रचनात्मकता को बढ़ावा देता है, और एक पेशेवर और सांस्कृतिक वातावरण में हमारी राष्ट्रीय भाषा के उपयोग को बढ़ावा देता है। यह मंच प्रदान करके पत्रिका भाषाई गौरव और सांस्कृतिक संबंध को मजबूत करती है।

संपादकीय टीम और योगदानकर्ताओं का समर्पण हार्दिक प्रशंसा का पात्र है। उनके प्रयास यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक अंक आकर्षक, सार्थक और हमारी सामूहिक आवाज को प्रतिबिंबित करे। मैं चित्रलेखा की पूरी टीम को निरंतर सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। और कामना करता हूँ कि पत्रिका को आने वाले वर्षों तक अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और एकता को प्रेरित करती रहे।

जय हिंद ।

डॉ. संतोष कुमार बी.

संपादक की कलम से

मुझे चित्रलेखा पत्रिका के वर्ष २०२५ के दूसरे अंक को प्रस्तुत करने में अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह सत्र सभी प्रकार से संस्थान की अभूतपूर्व प्रगति को दर्शाता हुए हमारे संकाय, विद्यार्थियों, नर्सो, तकनीकी अधिकारियों और सभी चित्रा परिवार के सदस्यों की प्रतिभा को दर्शाते हुए उनकी एकता, सफलता और शक्ति का सन्देश देता है।

माननीय उपराष्ट्रपति का दौरा, डीबीटी सचिव - डॉ. गोखले द्वारा डॉ. एम. एस. वालियाथान स्मृति व्याख्यान - 38वें केरल विज्ञान कांग्रेस की बौद्धिक प्रस्तावना, अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र और कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र का उद्घाटन और भारत की पहली बायोएस्ट्रोनॉटिक्स में पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप, तिरुवनंतपुरम की आठ प्रमुख राष्ट्रीय संस्थाओं के बीच सामान्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर इत्यादि कार्यकर्म अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक रहे जो चित्रा संस्थान की निरंतर प्रगति और निदेशक द्वारा लिए गए भविष्य के अथक प्रयासो की नींव को दर्शाता है।

महिला संकाय कर्मियों की गौरवपूर्ण उपलब्धि उनके वर्षो की मेहनत का नतीजा है जोकि ख़ुशी का संचार करते हुए, नयी पीढ़ी को रोल मॉडल संजो कर प्रेरणा का स्रोत बनने का भी कार्य करेगी।

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व निदेशक, एक दूरदर्शी चिकित्सक, प्रशासक और संस्थान निर्माता, डॉ. मोहनदास को इस वर्ष खोना संस्थान के लिए बहुत दुखदायी था। समस्त चित्रा परिवार एक जुट होकर उनको सच्ची श्रद्धांजलि अपने निरंतर प्रगतिशील प्रयासों से संस्थान को और उन्नति की राह पर अग्रसर करता रहेगा।

फिट इंडिया एवं अनेको कार्यकर्म समय - समय पर वैज्ञानिक, जागरूकता कार्यक्रम, सांस्कृतिक गतिविधियाँ इस सत्र की विशेषता रही। मुझे कुछ भी कहने की जरुरत नहीं है क्योकि सभी का चित्रलेखा में सक्रिय योगदान इस अंक को देखने से सर्वविदित हो जायेगा।

मैं एक बार फिर से सभी को हार्दिक धन्यवाद देते हुए नए वर्ष २०२६ की शुभकामनाएँ देती हूँ। संस्थान को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के संकल्प के साथ हम शीघ्र ही नए अंक में आपसे मिलेंगे।

जय भारत, जय चित्रा संस्थान।

डॉ. कमलेश के गुलिया

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

- श्री चित्रा संस्थान में माननीय उपराष्ट्रपति का ऐतिहासिक दौरा 1
- डॉ. एम. एस. वालियाथन स्मृति व्याख्यान - 38वें केरल विज्ञान कांग्रेस की बौद्धिक प्रस्तावना 3
- अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र और कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र का उद्घाटन और भारत की पहली बायोएस्ट्रोनॉटिक्स में पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप 5
- तिरुवनंतपुरम की आठ प्रमुख राष्ट्रीय संस्थाओं के बीच सामान्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर 9
- स्वतंत्रता दिवस समारोह 10
- श्री चित्रा संस्थान की नई बस का उद्घाटन ध्वजारोहण समारोह 14
- छह महीनों में दो अंतरराष्ट्रीय सम्मान: डॉ. शैलजा पी. एन. की गौरवपूर्ण उपलब्धि 15
- वैज्ञानिक डॉ. आर. एस. जयश्री को "वूमेन इन मेडिसिन" पुरस्कार 16
- डॉ. मोहनदास को भावभीनी श्रद्धांजलि 17
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 और पदयात्रा पर रिपोर्ट 19
- निवारक सतर्कता' पर व्याख्यान 21
- राष्ट्रीय कार्डियक नर्सिंग सम्मेलन 2025 22
- रोगी-केंद्रित देखभाल, कनेक्ट एंड प्रोटेक्ट को बढ़ावा देना: प्रशिक्षण रिपोर्ट 24
- एससीटीआईएमएसटी खेल प्रकोष्ठ द्वारा टूर्नामेंट का आयोजन 26
- विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह समारोह 32
- बीएमटी विंग में आयोजित "हृदय आपके हाथों में और आपकी स्क्रीन पर: विच्छेदन से आयाम तक" एक दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला 33
- 11वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 पर रिपोर्ट 35
- एनआईटी कालीकट में आयोजित "स्वश्रय भारत 2025" में भागीदारी पर रिपोर्ट 36
- स्वच्छता ही सेवा 2025 पर रिपोर्ट: स्वच्छोत्सव 38
- एससीटीआईएमएसटी में पीओएसएच अधिनियम 2013 का स्मरणोत्सव 40
- हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025 रिपोर्ट 42
- एससीटीआईएमएसटी को टोलिक पुरस्कार: राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की सराहना 50
- कला और शिल्प: 3-डी पेपर क्रिसमस ट्री, थ्रेड आर्ट, पेंसिल रेखाचित्र 52
- कबाड़ से कारीगरी 54
- विस्तृत यात्रा प्रतिवेदन: कश्मीर से ऐतिहासिक और आज के अवलोकन डॉ संतोष (रजिस्ट्रार) 55
- चित्रों और सृजन का पर्व 62
- कैनवास पर हमारी दुनिया 68
- कथकली के रंग और पात्र: प्रतीकों के माध्यम से व्यक्तित्व की पहचान 69
- चित्रा टेक रिक्रिएशन क्लब: बीएमटी विंग की सांस्कृतिक चेतना 71
- चित्रा टेक रिक्रिएशन क्लब का गावी के लिए एक दिवसीय भ्रमण 73

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में माननीय उपराष्ट्रपति का ऐतिहासिक दौरा

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में जैव-चिकित्सकीय नवाचार को नई गति

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन द्वारा 4 नवंबर 2025 के दिन श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम का औपचारिक एवं गरिमामय दौरा संस्थान के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि भरा दिन रहा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर उनके साथ केरल के माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में श्री सुरेश गोपी, माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री (पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस एवं पर्यटन), भारत सरकार तथा श्री के. एन. बालगोपाल, माननीय वित्त मंत्री, केरल सरकार की उपस्थिति आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया।

दौरे के अंतर्गत माननीय उपराष्ट्रपति **"स्वावलंबी नवोत्पाद आत्मनिर्भरता के लिए नवाचार"** विषय पर आधारित एससीटीआईएमएसटी प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। यह प्रदर्शनी देश में आत्मनिर्भर स्वास्थ्य प्रणाली के निर्माण में संस्थान की भूमिका को रेखांकित करती है। प्रदर्शनी में एससीटीआईएमएसटी द्वारा विकसित, अनूदित (ट्रांसलेटेड) एवं व्यावसायीकृत अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों को प्रदर्शित किया गया, जो किफायती, प्रभावी और स्वदेशी तकनीकों पर आधारित हैं।

प्रदर्शनी के प्रमुख आकर्षणों में मेडिकल विंग, पब्लिक हेल्थ विंग तथा बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग की अनुसंधान उपलब्धियाँ, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में योगदान, तथा रोगी-केंद्रित नवाचार शामिल हैं। इसके साथ ही टाइम्ड इनक्यूबेशन सेंटर से विकसित हो रहे उभरते स्टार्ट-अप्स, नवोन्मेषी उत्पादों और उद्योग-अकादमिक सहयोग के सफल मॉडल भी प्रस्तुत किए गए, जो युवाओं और वैज्ञानिकों को उद्यमिता के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

माननीय उपराष्ट्रपति ने संस्थान की अनुसंधान सुविधाओं, रोगी देखभाल सेवाओं और प्रौद्योगिकी विकास गतिविधियों का अवलोकन किया तथा वैज्ञानिकों, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं से संवाद भी किया। यह संवाद भविष्य की स्वास्थ्य आवश्यकताओं, स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकास और वैश्विक स्तर पर भारत की वैज्ञानिक भूमिका को सुदृढ़ करने की दिशा में उपयोगी सिद्ध होगा।

माननीय उपराष्ट्रपति का यह दौरा रोगी देखभाल, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जैव-चिकित्सकीय अनुसंधान और स्वदेशी चिकित्सा प्रौद्योगिकियों के विकास में एस सीटीआईएमएसटी के निरंतर योगदान की राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता को दर्शाता है। संस्थान वर्षों से भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को मजबूत करने, आयात-निर्भरता को कम करने और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाता आ रहा है। यह ऐतिहासिक दौरा संस्थान के लिए गौरव का क्षण होने के साथ-साथ भविष्य के नवाचारों के लिए नई प्रेरणा भी प्रदान करेगा।

"जब भारत आत्मनिर्भरता की बात करता है, तो उसका अर्थ आत्मकेंद्रित होना नहीं है। इसका अर्थ वैश्विक सुख, सहयोग और शांति है।"

— माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में डॉ. एम. एस. वालियाथन स्मृति व्याख्यान - 38वें केरल विज्ञान कांग्रेस की बौद्धिक प्रस्तावना

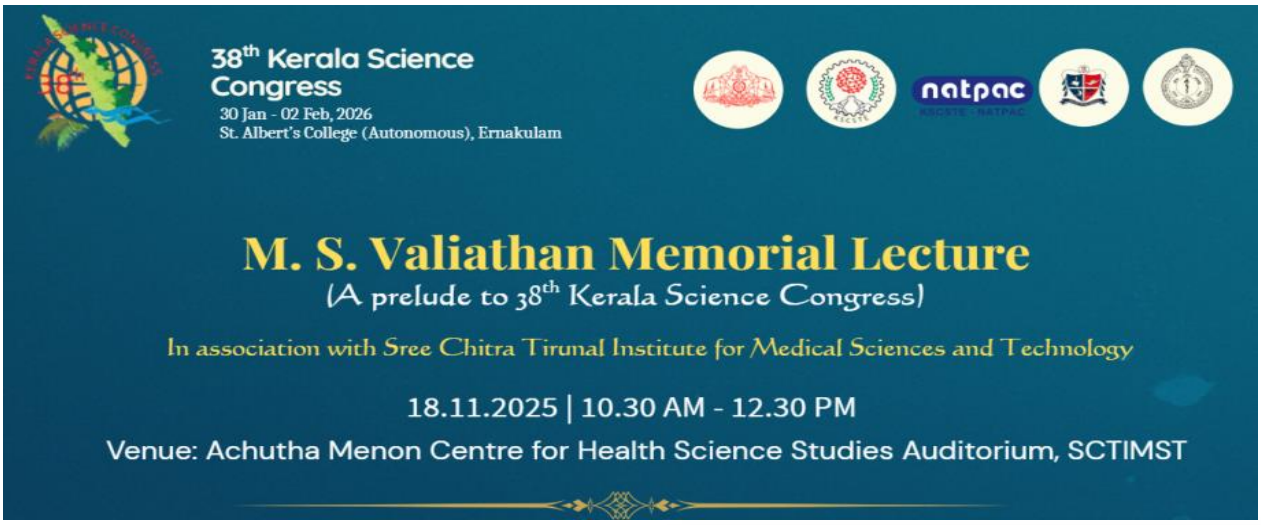

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में डॉ. एम. एस. वालियाथन स्मृति व्याख्यान का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन आगामी 38वें केरल विज्ञान कांग्रेस की आधिकारिक प्रस्तावना के रूप में आयोजित किया गया और इसका उद्देश्य भारत के प्रख्यात हृदय शल्य चिकित्सक, वैज्ञानिक तथा संस्थान निर्माता डॉ. एम. एस. वालियाथन के अतुलनीय योगदान को स्मरण करना तथा वैज्ञानिक संवाद को नई दिशा देना था।

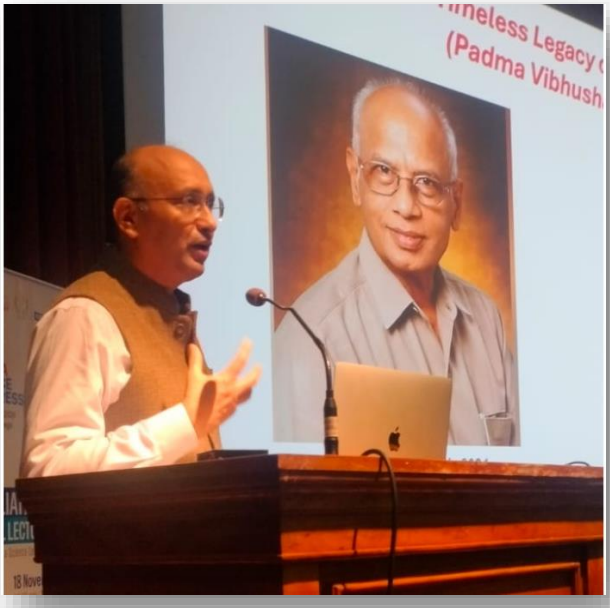

कार्यक्रम में देश के जाने-माने वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, चिकित्सकों, नीति-निर्माताओं, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। स्मृति व्याख्यान ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और समाज के बीच के गहरे संबंधों को रेखांकित करते हुए यह संदेश दिया कि अनुसंधान तभी सार्थक है जब उसका प्रत्यक्ष लाभ समाज और जनस्वास्थ्य तक पहुँचे।

डीबीटी सचिव, डॉ. राजेश सुधीर गोखले द्वारा व्याख्यान दिया गया जिसमे डॉ. एम. एस. वालियाथन के दूरदर्शी नेतृत्व और उनके द्वारा प्रतिपादित स्वदेशी नवाचार, आत्मनिर्भर चिकित्सा प्रौद्योगिकी तथा अंतर्विषयक अनुसंधान की अवधारणाओं पर विस्तार से चर्चा की गयी। विशेष रूप से स्वदेशी हृदय वाल्व के विकास, भारत में जैव-चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी को संस्थागत रूप देने तथा एस सीटीआईएमएसटी को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाने में उनकी भूमिका को भावपूर्ण शब्दों में स्मरण किया गया।

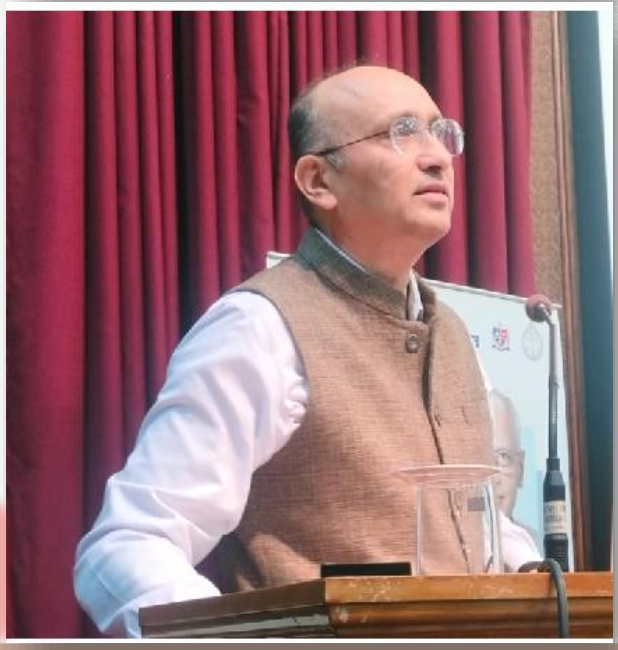

"उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्त होने तक मत रुको।"— स्वामी विवेकानंद

इस अवसर पर यह भी रेखांकित किया गया कि डॉ. वालियाथान ने न केवल एक उत्कृष्ट चिकित्सक और वैज्ञानिक के रूप में योगदान दिया, बल्कि एक ऐसे संस्थान निर्माता के रूप में भी कार्य किया, जिन्होंने विज्ञान को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा। उनके विचार आज भी स्वास्थ्य सेवा, अनुसंधान नीति और नवाचार आधारित विकास के लिए मार्गदर्शक बने हुए हैं।

कार्यक्रम ने 38वें केरल विज्ञान कांग्रेस के लिए एक सशक्त बौद्धिक मंच तैयार किया, जहाँ विज्ञान को जनहित, सतत विकास और मानव कल्याण के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का आह्वान किया गया। स्मृति व्याख्यान के माध्यम से यह संदेश स्पष्ट रूप से उभरा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित न रहकर समाज की वास्तविक आवश्यकताओं को संबोधित करने का माध्यम होना चाहिए। डॉ. एम. एस. वालियाथान स्मृति व्याख्यान न केवल एक श्रद्धांजलि कार्यक्रम था, बल्कि भविष्य के वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी सिद्ध हुआ। यह आयोजन एससीटीआईएमएसटी की उस प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट करता है, जिसके अंतर्गत संस्थान उत्कृष्ट अनुसंधान, नवाचार और जनसेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में निरंतर योगदान दे रहा है।

"सपना वह नहीं है जो आप सोते समय देखते हैं; सपना वह है जो आपको सोने ही नहीं देता।"
— भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी. में अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र (सीएसएमआर) और कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र (सीएसएल) का उद्घाटन और भारत की पहली बायोएस्ट्रोनॉटिक्स में पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप की शुरुआत

अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र (सी एस एम् आर) तथा कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र (सी एस एल) का उद्घाटन, बायोएस्ट्रोनॉटिक्स में पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप कार्यक्रम का शुभारंभ, विशिष्ट अतिथि व्याख्यान: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन – उपलब्धियाँ और भविष्य अंतरिक्ष चिकित्सा, जैव-चिकित्सीय अनुसंधान तथा कौशल-आधारित चिकित्सकीय प्रशिक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र तथा कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र का उद्घाटन किया गया।

ये केंद्र चिकित्सा, अंतरिक्ष विज्ञान और उन्नत सिमुलेशन प्रौद्योगिकियों के समन्वय से अनुसंधान, नवाचार और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने हेतु अत्याधुनिक सुविधाओं के रूप में स्थापित किए गए हैं।

इस अवसर पर **बायोएस्ट्रोनॉटिक्स में पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप कार्यक्रम** का औपचारिक शुभारंभ भी किया गया। यह एक अग्रणी शैक्षणिक पहल है, जिसका उद्देश्य मानव अंतरिक्ष उड़ान, अंतरिक्ष शरीर-विज्ञान तथा अनुप्रयुक्त जैव-चिकित्सीय विज्ञान के क्षेत्र में उच्चस्तरीय अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। यह कार्यक्रम अंतरिक्ष अन्वेषण से जुड़े जटिल चिकित्सकीय चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम भावी शोधकर्ताओं को तैयार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम को और भी गरिमामय बनाया **विशिष्ट अतिथि व्याख्यान** ने, जिसका विषय था **"भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन: उपलब्धियाँ और भविष्य"**। यह व्याख्यान **डॉ. वी. नारायणन**, माननीय सचिव, अंतरिक्ष विभाग; अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग; अध्यक्ष, इसरो, भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत किया गया।

CENTER FOR SPACE MEDICINE AND
Dr. V. Narayana
On
26th November 2025

तिरुवनंतपुरम, 26 नवंबर 2025: श्री चित्रा तिरुनल आयुर्वेद विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान ने तिरुवनंतपुरम के पूजप्पुरा स्थित अपने जैवचिकित्सा प्रौद्योगिकी विंग में अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र (सीएसएमआर) और कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र (सीएसएल) का उद्घाटन किया। एससीटीआईएमएसटी ने बेंगलुरु स्थित इसरो के मानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र (एचएसएफसी) के सहयोग से जैव अंतरिक्ष विज्ञान में एक नया पोस्ट-डॉक्टोरल फेलोशिप (पीडीएफ) कार्यक्रम शुरू किया है। यह देश में पहली बार है कि एससीटीआईएमएसटी में मानव अंतरिक्ष चिकित्सा के लिए जैव अंतरिक्ष विज्ञान पाठ्यक्रम की पेशकश की जा रही है। यह आयोजन भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के लिए जैव चिकित्सा सहायता को आगे बढ़ाने और स्वास्थ्य सेवा को लाभ पहुंचाने वाले नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए एससीटीआईएमएसटी की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

नवस्थापित अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र, कौशल एवं सिमुलेशन प्रयोगशाला केंद्र और जैव अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातकोत्तर फैलोशिप कार्यक्रम, एससीटीआईएमएसटी और इसरो के बीच हुए फ्रेमवर्क समझौता ज्ञापन (एमओयू) के प्रमुख परिणाम स्वरूप विकसित किए गए हैं, जो भारत के गगनयान मिशन में योगदान दे रहे हैं। सभा को संबोधित करते हुए डॉ. दिनेश कुमार सिंह ने याद दिलाया कि जिस दिन उन्होंने एससीटीआईएमएसटी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए थे, उसी दिन से उन्हें विश्वास था कि संस्थान महत्वपूर्ण प्रगति प्रदर्शित करेगा। उन्होंने कहा कि जैव अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातकोत्तर फैलोशिप का शुभारंभ, जो सही मायने में भारत में अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है, एससीटीआईएमएसटी के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने एससीटीआईएमएसटी को उसकी दूरदर्शिता के लिए बधाई दी और मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशनों में निरंतर सहयोग का विश्वास व्यक्त किया।

संस्थानों के बीच उद्घाटन और संयुक्त शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रयासों से एससीटीआईएमएसटी और इसरो के बीच मजबूत साझेदारी और भी पुष्ट होती है। ये पहलें नवीन अनुसंधान, सिमुलेशन-आधारित प्रशिक्षण और अंतरिक्ष चिकित्सा में भविष्य के विशेषज्ञों की तैयारी के माध्यम से भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के प्रति उनकी साझा प्रतिबद्धता को उजागर करती हैं।

2 अगस्त 2024 को, इसरो ने घोषणा की कि शुभांशु शुक्ला अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आई एस एस) के एक्सिओम मिशन 4 का हिस्सा होंगे। यह मिशन इसरो, नासा और स्पेसएक्स के बीच एक संयुक्त प्रयास था। शुक्ला को मिशन पायलट के रूप में नामित किया गया था। इस मिशन का नेतृत्व अनुभवी पेगी व्हिटसन ने मिशन विशेषज्ञों स्लावोस्ज़ उज़्नान्स्की-विस्निव्स्की और टिबोर कापू के साथ मिलकर किया। यह मिशन 25 जून 2025 को सुबह 06:31 यू टी सी पर फ्लोरिडा स्थित नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर के लॉन्च कॉम्प्लेक्स 39A से सफलतापूर्वक लॉन्च हुआ। यह 26 जून 2025 को 10:31 यू टी सी पर आई एस एस से जुड़ा, और शुक्ला आई एस एस का दौरा करने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री और 1984 में राकेश शर्मा के बाद अंतरिक्ष में जाने वाले दूसरे भारतीय बने। चालक दल 12:14 यू टी सी पर आई एस एस में प्रवेश किया, और 14:00 यू टी सी पर, आने वाले दल के लिए एक औपचारिक स्वागत समारोह आयोजित किया गया, जिसके दौरान व्हिटसन ने शुक्ला को एक अंतरिक्ष यात्री पिन दिया, जिससे उन्हें अंतरिक्ष में पहुंचने वाले 634वें व्यक्ति के रूप में नामित किया गया।

अपने संबोधन में डॉ. नारायणन ने इसरो की उल्लेखनीय यात्रा पर प्रकाश डालते हुए इसकी प्रमुख उपलब्धियों, स्वदेशी तकनीकी विकास तथा वैश्विक अंतरिक्ष अन्वेषण में इसकी बढ़ती भूमिका को रेखांकित किया।

उन्होंने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की भावी दृष्टि पर भी विस्तार से चर्चा की तथा नवाचार, मानव अंतरिक्ष उड़ान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और दीर्घकालिक अंतरिक्ष अभियानों के लिए अंतरिक्ष चिकित्सा एवं अनुसंधान की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट किया।

तिरुवनंतपुरम की आठ प्रमुख राष्ट्रीय संस्थाओं के बीच ऐतिहासिक सहयोग : एस. सी. टी. आई. एम. एस. टी. में सामान्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

तिरुवनंतपुरम स्थित आठ प्रमुख राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित संस्थाओं ने 10 सितंबर 2025 को श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में एक औपचारिक सहयोग के लिए सामान्य समझौता ज्ञापन (एम् ओ यू) पर सहमति व्यक्त की। यह ऐतिहासिक पहल वैज्ञानिक अनुसंधान, शैक्षणिक साझेदारी और नवाचार को एक नई दिशा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस सहयोग में सम्मिलित संस्थाएँ हैं—

1. **राजीव गांधी जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आर जी सी बी)**
2. **भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आए आए एस इ आर)**
3. **राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (ऍन सी इ एस एस)**
4. **केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान (सी टी सी आर आई -आईसीएआर)**
5. **सीएसआईआर – राष्ट्रीय अंतर्विषयक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सी एस आई आर - ऍन आई आई एस टी)**
6. **भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई एस टी)**
7. **उन्नत संगणन विकास केंद्र (सी-डेक)**
8. **श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी)**

इस सामान्य एम् औ यू का उद्देश्य संयुक्त अनुसंधान कार्यक्रमों, संकाय एवं छात्रों के आदान-प्रदान, तथा अन्य शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों के माध्यम से परस्पर सहयोग को प्रोत्साहित करना है। यह पहल अंतर्विषयक अनुसंधान को सशक्त बनाने, अकादमिक एवं अनुसंधान साझेदारियों को मजबूत करने और विभिन्न वैज्ञानिक क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई है।

इस गरिमामय आयोजन को कई प्रतिष्ठित अतिथियों की वर्चुअल उपस्थिति से सम्मान प्राप्त हुआ। इनमें प्रो. अभय करंदीकर, माननीय सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार; डॉ. क्रिस गोपालकृष्णन, माननीय अध्यक्ष, एससीटीआई एमएसटी; तथा श्री सुनील कुमार, प्रमुख, स्वायत्त संस्थान प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार प्रमुख रूप से शामिल थे।

समारोह में विभिन्न सहभागी संस्थानों के प्रमुखों की भी उपस्थिति रही, जिनमें श्री ई. मंगेश, महानिदेशक, सी-डेक; डॉ. चंद्रभास नारायण, निदेशक, आर जी सी बी; डॉ. जे. एन. मूर्ति, निदेशक, आए आए एस इ आर; डॉ. एन. वी. चलपति राव, निदेशक, ऍन सी इ एस एस; डॉ. जी. बायजू, निदेशक, सी टी सी आर आई – आई सी ए आर; डॉ. सी. आनंदारामकृष्णन, निदेशक, सी एस आई आर -ऍन आई आई एस टी; डॉ. दीपंकर बनर्जी, निदेशक, आई आई एस टी; डॉ. संजय बिहारी, निदेशक, एससीटीआईएमएसटी तथा डॉ. हरिकृष्ण वर्मा पी.आर., प्रमुख, बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग, एससीटीआईएमएसटी शामिल थे।

सभी ने संयुक्त रूप से सहयोगात्मक अनुसंधान और शैक्षणिक उत्कृष्टता के साझा दृष्टिकोण की पुनः पुष्टि की। यह औपचारिक सहयोग एक सशक्त वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो ज्ञान के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करेगा और अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में राष्ट्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में सार्थक योगदान देगा।

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के अस्पताल स्कंध एवं बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग में ७९वा स्वतंत्रता दिवस समारोह

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के हॉस्पिटल विंग एवं बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग में ७९वा स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर दोनों परिसरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा संविधान के मूल्यों—लोकतंत्र, समानता, धर्मनिरपेक्षता और न्याय के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दोहराया गया।

हॉस्पिटल विंग में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई, जिसके बाद राष्ट्रगान का सामूहिक गायन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वतंत्रता दिवस के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला और रोगी सेवा, करुणा तथा समर्पण को राष्ट्र सेवा का महत्वपूर्ण रूप बताया। चिकित्सकों, नर्सों और स्वास्थ्यकर्मियों के अथक प्रयासों की सराहना करते हुए कहा गया कि वे प्रतिदिन अपने कर्तव्यों के माध्यम से संविधान की भावना को साकार कर रहे हैं। बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग में भी स्वतंत्रता दिवस समारोह उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया।

ध्वजारोहण के पश्चात वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने स्वदेशी नवाचार, आत्मनिर्भर भारत और राष्ट्र निर्माण में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका पर जोर दिया। बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग द्वारा विकसित स्वदेशी चिकित्सा उपकरणों और तकनीकों को देश की स्वास्थ्य प्रणाली को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया गया।दोनों विंगों में कार्यक्रम के दौरान संविधान की प्रस्तावना का स्मरण किया गया तथा सभी कर्मचारियों ने अपने कर्तव्यों का ईमानदारी और निष्ठा के साथ पालन करने का संकल्प लिया। यह समारोह न केवल राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक बना, बल्कि संस्थान की उस परंपरा को भी सुदृढ़ करता है, जिसमें सेवा, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है।

स्वतंत्रता दिवस का यह आयोजन संस्थान के सदस्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना और सभी को राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को और अधिक समर्पण के साथ निभाने का संदेश देता है।

India

श्री चित्रा संस्थान की नई बस का उद्‌घाटन ध्वजारोहण समारोह 15-8-2025

इस नयी बस के उद्‌घाटन के पश्चात् अब संस्थान में दो बस होने से कर्मचारियों को अस्पताल और बी एम् टी स्कंध के बीच आसान आवागमन की सुविधा प्रदान की गयी है। संस्थान के दोनों स्कंधो में बस की समय सारणी प्रदर्शित की गयी है जिससे चित्रा कर्मियों को एक दूसरे स्कंध में अविरल जाना संभव हो गया है।

बस की समय सारणी

अस्पताल स्कंध

बी एम् टी स्कंध

छह महीनों में दो अंतरराष्ट्रीय सम्मान: डॉ. शैलजा पी. एन. की गौरवपूर्ण उपलब्धि

वर्ल्ड स्ट्रोक ऑर्गनाइजेशन (डब्ल्यूएसओ) का अध्यक्षीय पुरस्कार:

डॉ. शैलजा पी. एन प्रोफेसर, को **वर्ल्ड स्ट्रोक ऑर्गनाइजेशन** का अध्यक्षीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें स्ट्रोक उपचार, अनुसंधान और जनस्वास्थ्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए मिला। उनके प्रयासों से केरल में स्ट्रोक देखभाल सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

इसके अतिरिक्त, **बर्न विश्वविद्यालय** द्वारा उन्हें मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके वैश्विक स्तर पर स्ट्रोक देखभाल को सुदृढ़ बनाने में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों को रेखांकित करता है। डॉ. शैलजा के प्रयासों से केरल सहित भारत में स्ट्रोक उपचार सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जिससे अनेक रोगियों को बेहतर और समय पर चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो रही है।

एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी. की वैज्ञानिक को 'वुमेन इन मेडिसिन 2025' पुरस्कार से सम्मानित किया गया

आयुर्विज्ञान अकादमी (भारत) जो भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत है, ने वर्ष 2025 के प्रतिष्ठित **"वूमेन इन मेडिसिन" पुरस्कार** के लिए श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) के बायोफोटोनिक्स एवं इमेजिंग प्रभाग की वैज्ञानिक 'जी', **डॉ. आर. एस. जयश्री** के चयन की घोषणा की।

यह सम्मान विशेष रूप से ऐतिहासिक है, क्योंकि **केरल से यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली डॉ. जयश्री पहली वैज्ञानिक हैं**। यह पुरस्कार उन महिलाओं को प्रदान किया जाता है जिन्होंने चिकित्सा एवं जैव-चिकित्सकीय विज्ञान के क्षेत्रों में असाधारण और उल्लेखनीय योगदान दिया है।

एनएएमएस ने अपने आधिकारिक पत्र में डॉ. जयश्री को हार्दिक बधाई देते हुए उनके जैव-चिकित्सकीय अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में किए गए अग्रणी कार्यों की सराहना की है। उनके अनुसंधान ने वैज्ञानिक समुदाय को नई दिशा प्रदान की है तथा संबंधित क्षेत्र में समझ को उल्लेखनीय रूप से आगे बढ़ाया है। यह पुरस्कार 8 **नवंबर** 2025 को **पोस्टग्रेजुएट इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़** में आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान औपचारिक रूप से प्रदान किया ।

इस अवसर पर डॉ. जयश्री को अपने शोध कार्य का प्रस्तुतीकरण करने के लिए भी आमंत्रित किया गया है तथा उन्हें **सम्मान पत्र (स्क्रॉल ऑफ ऑनर)** प्रदान किया जाएगा।

गौरतलब है कि विज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. जयश्री को पिछले वर्ष **माननीय राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित** किया गया था, जो उनकी वैज्ञानिक उत्कृष्टता और राष्ट्रीय स्तर पर उनके योगदान का प्रमाण है।

डॉ. आर. एस. जयश्री को प्राप्त यह सम्मान न केवल श्री चित्रा तिरुनाल के लिए, बल्कि केरल और देश की वैज्ञानिक समुदाय के लिए भी गर्व का विषय है और यह चिकित्सा विज्ञान में महिलाओं की सशक्त भूमिका को रेखांकित करता है।

डॉ. मोहनदास को भावभीनी श्रद्धांजलि

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व निदेशक, एक दूरदर्शी चिकित्सक, प्रशासक और संस्थान निर्माता

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. मोहनदास के निधन से चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और अकादमिक जगत ने एक ऐसे व्यक्तित्व को खो दिया है, जिनका योगदान केवल एक संस्थान तक सीमित नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिदृश्य को दिशा देने वाला रहा। उनका जीवन समर्पण, सादगी, अनुशासन और दूरदर्शिता का अद्भुत उदाहरण था। डॉ. मोहनदास एक उत्कृष्ट चिकित्सक ही नहीं, बल्कि एक संवेदनशील प्रशासक, प्रेरक शिक्षक और समाज के प्रति गहरी प्रतिबद्धता रखने वाले व्यक्तित्व थे।

डॉ. मोहनदास ने अपने लंबे और प्रतिष्ठित करियर के दौरान चिकित्सा शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और संस्थागत विकास के विभिन्न आयामों में उल्लेखनीय योगदान दिया। एससीटीआईएमएसटी के निदेशक के रूप में उनका कार्यकाल संस्थान के लिए परिवर्तन और सुदृढ़ीकरण का काल माना जाता है।

उन्होंने संस्थान की मूल भावना—उच्च स्तरीय रोगी देखभाल, अग्रणी अनुसंधान और स्वदेशी जैव-चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी के विकास—को और अधिक मजबूती प्रदान की।एक संवेदनशील चिकित्सक डॉ. मोहनदास को उनके सहकर्मी और शिष्य एक ऐसे चिकित्सक के रूप में याद करते हैं, जिनके लिए रोगी केवल "केस" नहीं, बल्कि एक संपूर्ण मानव होता था। उनकी चिकित्सा पद्धति में वैज्ञानिक कठोरता के साथ-साथ मानवीय संवेदना का संतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। वे मानते थे कि उत्कृष्ट चिकित्सा वही है जो तकनीकी दक्षता के साथ करुणा को भी समान महत्व दे। रोगियों और उनके परिजनों के प्रति उनका व्यवहार अत्यंत सहज और आश्वस्त करने वाला था। यही कारण था कि वे न केवल एक सफल चिकित्सक, बल्कि अत्यंत सम्मानित और प्रिय व्यक्ति भी थे।

दूरदर्शी नेतृत्व और प्रशासनिक क्षमता एससीटीआईएमएसटी के निदेशक के रूप में डॉ. मोहनदास ने संस्थान के प्रशासन को पारदर्शिता, अनुशासन और अकादमिक स्वतंत्रता के मूल्यों पर आधारित किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि वैज्ञानिकों, चिकित्सकों और शोधकर्ताओं को नवाचार और उत्कृष्टता के लिए अनुकूल वातावरण मिले। उनके नेतृत्व में संस्थान की शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों को नई गति मिली।

उन्होंने अंतर्विषयक सहयोग को प्रोत्साहित किया और चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा जैव-चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी के बीच मजबूत सेतु का निर्माण किया। उनका विश्वास था कि जटिल स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ एक साझा मंच पर मिलकर कार्य करें। सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता डॉ. मोहनदास का योगदान केवल तृतीयक चिकित्सा तक सीमित नहीं था।

वे सार्वजनिक स्वास्थ्य के व्यापक मुद्दों—समानता, पहुंच और गुणवत्ता—के प्रति गहराई से संवेदनशील थे। उन्होंने बार-बार इस बात पर जोर दिया कि उन्नत चिकित्सा और अनुसंधान का वास्तविक उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य लाभ पहुंचाना होना चाहिए। उनकी सोच में स्वास्थ्य सेवा एक सामाजिक दायित्व थी, न कि केवल एक पेशा। यही दृष्टिकोण उनके निर्णयों और नीतियों में परिलक्षित होता था।

एक प्रेरक शिक्षक और मार्गदर्शक डॉ. मोहनदास को युवा चिकित्सकों और शोधकर्ताओं का मार्गदर्शक माना जाता था। वे विद्यार्थियों और जूनियर सहकर्मियों को केवल ज्ञान ही नहीं देते थे, बल्कि उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने, प्रश्न पूछने और नैतिक मूल्यों के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करते थे। उनके लिए नेतृत्व का अर्थ आदेश देना नहीं, बल्कि उदाहरण प्रस्तुत करना था। उनकी सादगी, समयपालन और कार्य के प्रति निष्ठा ने अनेक लोगों को प्रभावित किया और प्रेरित किया। व्यक्तित्व और मूल्यव्यक्तिगत जीवन में डॉ. मोहनदास अत्यंत सरल, विनम्र और आत्मीय थे। उच्च पदों पर रहते हुए भी उनमें कभी अहंकार नहीं दिखाई दिया।

वे सभी से समान सम्मान के साथ व्यवहार करते थे—चाहे वह वरिष्ठ वैज्ञानिक हों, नर्सिंग स्टाफ हो या प्रशासनिक कर्मचारी।उनका जीवन इस बात का प्रमाण था कि सच्ची महानता शोर में नहीं, बल्कि शांत, निरंतर और ईमानदार कर्म में निहित होती है।एक अपूरणीय क्षति डॉ. मोहनदास के निधन से श्री चित्रा संस्थान ने एक ऐसे मार्गदर्शक को खो दिया है, जिनकी दृष्टि और मूल्य आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रासंगिक रहेंगे।

चिकित्सा और विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान, संस्थान निर्माण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और मानवीय मूल्यों पर आधारित नेतृत्व सदैव स्मरणीय रहेगा। वे भले ही आज हमारे बीच शारीरिक रूप से उपस्थित न हों, किंतु उनके विचार, उनके द्वारा स्थापित प्रणालियाँ और उनके द्वारा प्रेरित असंख्य लोग उनकी विरासत को आगे बढ़ाते रहेंगे। डॉ. मोहनदास का जीवन और कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

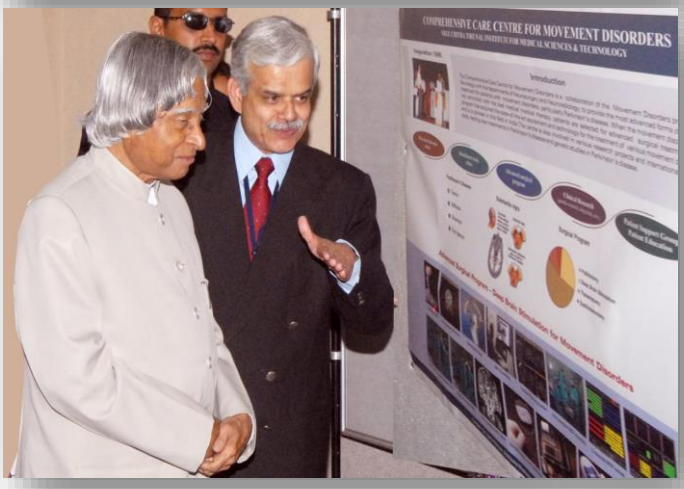

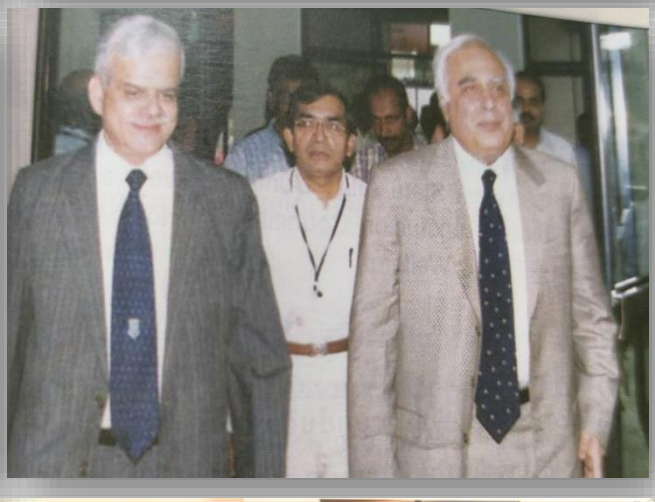

श्री चित्रा परिवार, चिकित्सा समुदाय और असंख्य शिष्यों की ओर से डॉ. मोहनदास को भावभीनी श्रद्धांजलि।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 पर रिपोर्ट

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) द्वारा समन्वित राष्ट्रीय सतर्कता सप्ताह के अनुरूप, श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) में 27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 मनाया गया। इस वर्ष का विषय, "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी," सार्वजनिक और व्यावसायिक जीवन में सत्यनिष्ठा बनाए रखने, पारदर्शिता को बढ़ावा देने और नैतिक आचरण को मजबूत करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति और संस्थान के सामूहिक कर्तव्य पर बल देता है। संस्थान के संकाय, कर्मचारियों और छात्रों के बीच इन मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों और सहभागिता गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित की गई।

उद्घाटन सत्र और विशेष वार्ता कार्यक्रम का प्रारंभ श्री मनोज अब्राहम आईपीएस, पुलिस महानिदेशक और सतर्कता एवं भ्रष्टाचार-विरोधी ब्यूरो, त्रिवेंद्रम के निदेशक द्वारा 24 अक्टूबर 2025 को सुबह 11:00 बजे एएमसीएचएसएस मुख्य सभागार में "सतर्कता जागरूकता" विषय पर दिए गए विशेष वार्ता से हुआ। अपने संबोधन में श्री मनोज अब्राहम ने सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत ईमानदारी, सतर्कता और नैतिक निर्णय लेने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सभी से अपने-अपने कार्यक्षेत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह किया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के उपलक्ष्य में, एससीटीआईएमएसटी के तीनों परिसरों में 27 अक्टूबर को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई।

पदयात्रा

संस्थान की भ्रष्टाचार मुक्त समाज के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाने के लिए, 30 अक्टूबर 2025 को सुबह 10:00 बजे पदयात्रा का आयोजन किया गया। संकाय सदस्य, छात्र और कर्मचारी बीएमटी विंग के एमएसवी ब्लॉक के सामने एकत्रित हुए और उत्साहपूर्वक इस आयोजन में भाग लिया। पदयात्रा का उद्देश्य नैतिकता, ईमानदारी और पारदर्शिता के प्रति सामूहिक जागरूकता को बढ़ावा देना था। पोस्टर प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और नारा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

First Prize

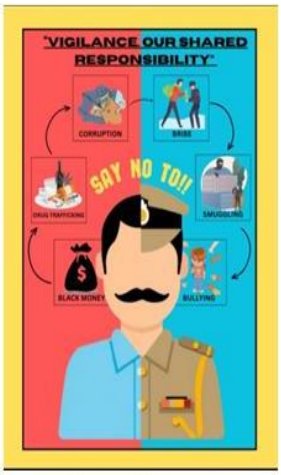

Second Prize

Third prize

'निवारक सतर्कता' पर व्याख्यान

केरल कृषि विश्वविद्यालय के बी.टेक बायोटेक्नोलॉजी के छात्रों को 13 अक्टूबर 2025 को बीएमटी विंग में संस्थान के दौरे के दौरान एससीटीआईएमएसटी के सीवीओ द्वारा 'निवारक सतर्कता' पर व्याख्यान दिया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के उपलक्ष्य में, 6 नवंबर 2025 को हाइब्रिड मोड के माध्यम से "जांच और रिपोर्ट" और "आरोप पत्र तैयार करना" विषयों पर दो सत्र आयोजित किए गए। ये सत्र तिरुवनंतपुरम स्थित वीएसएससी के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. आर. सुधाकरा बाबू द्वारा संचालित किए गए। सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का समापन 1 नवंबर 2025 को सुबह 9:00 बजे एएमसी सभागार में आयोजित एक औपचारिक विदाई सत्र के साथ हुआ।

राष्ट्रीय कार्डियक नर्सिंग सम्मेलन 2025

दूसरा राष्ट्रीय कार्डियक नर्सिंग सम्मेलन -2025, सोसाइटी ऑफ कार्डियक नर्सेस (इंडिया) द्वारा नर्सिंग प्रभाग और कार्डियोलॉजी विभाग, एससीटीआईएमएसटी के सहयोग से, 5 अक्टूबर 2025 को एएमसीएचएसएस सभागार, एससीटीआईएमएसटी में आयोजित किया गया। सम्मेलन का विषय था "हृदय विफलता देखभाल को उन्नत करना: विज्ञान, प्रौद्योगिकी और करुणा का एकीकरण - बेहतर रोगी परिणामों के लिए चिकित्सकों, नर्सों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जीवनशैली चिकित्सा का एकीकरण"। यह सम्मेलन देश भर के हृदय रोग विशेषज्ञों, चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों के लिए ज्ञान का आदान-प्रदान करने, नवीन प्रथाओं को साझा करने और हृदय विफलता प्रबंधन में उभरते रुझानों का पता लगाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया।

सम्मेलन - पूर्व कार्यशाला - 4 अक्टूबर 2025

राष्ट्रीय कार्डियक नर्सिंग सम्मेलन-2025 के एक भाग के रूप में, 4 अक्टूबर 2025 को एक सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "नैदानिक अनुसंधान के लिए आवश्यक डिजिटल दक्षताओं के साथ नर्सों को सशक्त बनाना"। कार्यशाला का उद्देश्य नर्सों की डिजिटल साक्षरता और अनुसंधान कौशल को बढ़ाना था, जिससे वे विकसित होते स्वास्थ्य बढ़ाना था, जिससे वे विकसित होते स्वास्थ्य सेवा परिदृश्य में नैदानिक अनुसंधान की प्रभावी योजना, संचालन और प्रबंधन कर सकें। सत्रों में सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि को व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ जोड़ा गया, जिससे प्रतिभागियों को एक व्यापक शिक्षण अनुभव प्राप्त हुआ। एम्स, नई दिल्ली और पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ जैसे प्रमुख राष्ट्रीय नर्सिंग संस्थानों के विशेषज्ञ संकाय सदस्यों ने सत्रों का नेतृत्व किया।

कार्यशाला में भारत भर के विभिन्न संस्थानों से कुल 45 नर्सों ने भाग लिया। सत्रों में शोध परियोजना की योजना और डिज़ाइन, साहित्य खोज और संदर्भ प्रबंधन के लिए एआई-सहायक उपकरणों का उपयोग, ऑनलाइन सर्वेक्षण निर्माण और डेटा संग्रह (गूगल फ़ॉर्म, रेडकैप और कोबोटूलबॉक्स) के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग, नैदानिक सेटिंग्स में मोबाइल डेटा संग्रह विधियाँ, माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल और संबंधित अनुप्रयोगों का उपयोग करके शोध डेटा का प्रबंधन और व्याख्या जैसे प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई।

कार्यशाला के अंत तक, प्रतिभागियों को एआई उपकरणों और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे उन्हें डिजिटल युग में नैदानिक अनुसंधान परियोजनाओं की प्रभावी ढंग से योजना बनाने, उन्हें क्रियान्वित करने और प्रबंधित करने की क्षमताएँ प्राप्त हुईं।

मुख्य सम्मेलन - 5 अक्टूबर 2025

मुख्य सम्मेलन 5 अक्टूबर को एएमसीएचएसएस सभागार, एससीटीआईएमएसटी, त्रिवेंद्रम में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 170 पंजीकृत प्रतिनिधि और 70 ऑनलाइन प्रतिभागी शामिल हुए, जो भारत भर के विभिन्न संस्थानों के नर्सिंग पेशेवरों, शिक्षाविदों और छात्रों की एक विस्तृत श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करते थे। दिन की शुरुआत पंजीकरण और एक औपचारिक उद्घाटन समारोह के साथ हुई। एससीटीआईएमएसटी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने स्वागत भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सभी प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत किया और हृदय देखभाल को आगे बढ़ाने में सहयोगात्मक शिक्षा के महत्व पर बल दिया। सोसाइटी ऑफ कार्डियक नर्सेस (इंडिया) की अध्यक्ष सुश्री डेनी थॉमस ने अध्यक्षीय भाषण दिया और हृदय नर्सिंग समुदाय को मजबूत बनाने में सोसाइटी के मिशन और विजन पर प्रकाश डाला। मुख्य भाषण डॉ. दीपिका खाखा, नर्सिंग सलाहकार, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली ने दिया, जिन्होंने साक्ष्य-आधारित अभ्यास, प्रौद्योगिकी और करुणामयी देखभाल को एकीकृत करने में नर्सों की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया। सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन केरल नर्सेस एंड मिडवाइव्स काउंसिल की रजिस्ट्रार डॉ. सोना पी. एस. ने किया, जिन्होंने नर्सिंग अभ्यास में निरंतर व्यावसायिक विकास के महत्व पर ज़ोर दिया।

सत्रों में हृदय नर्सिंग अभ्यास को आगे बढ़ाने के लिए केंद्रीय विषयों की एक विविध श्रृंखला शामिल थी, जिसमें हृदय विफलता का अवलोकन, हृदय विफलता में दिशानिर्देश-निर्देशित चिकित्सा उपचार, तीव्र हृदय विफलता का प्रबंधन, बेहतर रोगी परिणाम के लिए नर्स-नेतृत्व वाले हृदय विफलता क्लीनिक की भूमिका, हृदय विफलता में डिवाइस थेरेपी, हृदय प्रत्यारोपण पर पैनल चर्चा, हृदय पुनर्वास, हृदय विफलता के लिए एकीकृत स्वास्थ्य समाधान, स्वास्थ्य अनुसंधान के लिए धन के स्रोत, जीवनशैली चिकित्सा, हृदय देखभाल में रोगी सुरक्षा शामिल वैज्ञानिक सत्रों के अलावा, वैज्ञानिक पेपर प्रस्तुतियों और केस स्टडीज़ के लिए समानांतर सत्र आयोजित किए गए, जिनमें मौखिक और ई-पोस्टर दोनों प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। कार्यक्रम का समापन एससीटीआईएमएसटी, महिला जुम्बा टीम द्वारा "मूव फॉर हेल्थ" शीर्षक से एक जुम्बा प्रदर्शन के साथ हुआ, जिसमें हृदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में शारीरिक गतिविधि के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

कुल मिलाकर, मुख्य सम्मेलन ने सीखने, सहयोग और पेशेवर नेटवर्किंग के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया, जिससे प्रतिभागियों को हृदय नर्सिंग में नवीन प्रथाओं और साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोणों को साझा करने में सक्षम बनाया गया।

रोगी-केंद्रित देखभाल, कनेक्ट एंड प्रोटेक्ट को बढ़ावा देना: प्रशिक्षण रिपोर्ट

रोगी वकालत समिति ने 15 नवंबर 2025 को "कनेक्ट एंड प्रोटेक्ट" शीर्षक से एक स्टाफ प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस सत्र का संचालन भारत सरकार द्वारा प्रमाणित कॉर्पोरेट प्रशिक्षक और रिसर्च एकेडमी फॉर क्रिएटिव एक्सीलेंस (रेस) के संस्थापक श्री राजिलन एम. सी. ने किया। उन्होंने अस्पताल में संचार, टीमवर्क और सेवा गुणवत्ता को मज़बूत करने के उद्देश्य से एक आकर्षक और ज्ञानवर्धक सत्र का संचालन किया।

कार्यक्रम के दौरान, श्री राजिलन ने स्वास्थ्य क्षेत्र में उभरती चुनौतियों पर प्रकाश डाला और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के बीच मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने मरीजों और उनके आस-पास मौजूद लोगों की अपेक्षाओं को समझने और उन्हें पूरा करने की आवश्यकता पर चर्चा की, और इस बात पर ज़ोर दिया कि उनकी चिंताओं और तर्कों का हमेशा विनम्रता और सहानुभूतिपूर्वक समाधान किया जाना चाहिए। उन्होंने आधुनिक स्वास्थ्य सेवा परिवेश में समय प्रबंधन, नई आवश्यकताओं के अनुकूल होने और सुविधाओं के निरंतर उन्नयन के महत्व पर भी ज़ोर दिया।

इस सत्र में संगठनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओंपर चर्चा की गई, जिसमें टीम निर्माण, प्रभावी टीम सहभागिता, प्रदर्शन मूल्यांकन और सक्रिय श्रवण की भूमिका शामिल थी। प्रतिभागियों ने समूह चर्चाओं में भाग लिया, विचार साझा किए और कार्य-आधारित प्रस्तुतियों में भाग लिया जिससे सहयोग और रचनात्मक समस्या-समाधान को बढ़ावा मिला। संस्थान के सामने आने वाले मुद्दों और रोगियों द्वारा अनुभव की जाने वाली चुनौतियों की जाँच की गई, और उसके बाद उनके समाधान के व्यावहारिक तरीकों पर चर्चा की गई।

पूरे कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, सुझाव दिए और सभी गतिविधियों में उत्साह दिखाया। इस प्रशिक्षण ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में लचीलेपन, सकारात्मक संचार, पेशेवर ज़िम्मेदारी और नेतृत्व के मूल्यों को मज़बूत करने में मदद की। कुल मिलाकर, "कनेक्ट एंड प्रोटेक्ट" ने कर्मचारियों की क्षमताओं को बढ़ाने और रोगी-केंद्रित देखभाल में सुधार लाने की एक सार्थक पहल के रूप में काम किया।

प्रशिक्षण सत्र का समापन श्री शिशिर राज जे., सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन और श्री शिशिर राज जे., सामाजिक कार्यकर्ता और श्री चैतन्य, पीआरओ द्वारा समन्वयित के साथ हुआ।

नर्सिंग विभाग के लिए एक प्रशिक्षण सत्र: टीमवर्क, नेतृत्व और करुणा को बढ़ावा देना

रोगी वकालत समिति ने 18 अक्टूबर 2025 को नर्सिंग स्टाफ के लिए "कनेक्ट एंड प्रोटेक्ट" शीर्षक से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस सत्र का संचालन श्री राजिलन एम. सी. ने किया, जो भारत सरकार द्वारा प्रमाणित कॉर्पोरेट प्रशिक्षक और रिसर्च अकादमी फॉर क्रिएटिव एक्सीलेंस (रेस) के संस्थापक हैं।

सत्र के दौरान, श्री राजिलन ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास से जुड़े कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर ज़ोर दिया। उन्होंने तनावपूर्ण कार्यस्थलों, अनुकूलनशीलता और लचीलेपन तथा केएएस (ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल) मॉडल जैसे विषयों पर चर्चा की और बताया कि ये तत्व एक अधिक प्रभावी और संवेदनशील कार्य संस्कृति में कैसे योगदान करते हैं। उन्होंने टीम निर्माण और टीम निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित किया, टीम के सदस्यों के साथ जुड़ने, टीम के दृष्टिकोण स्वीकार करने के महत्व पर ज़ोर दिया कि टीम के सदस्य मूल्यवान मानव संसाधन हैं। सत्र में नेतृत्व गुणों, संवेदनशील संचार और व्यावसायिक बातचीत में रचनात्मक कौशल और आत्म-सम्मान के महत्व पर भी चर्चा की गई।

श्री राजिलन ने प्रतिभागियों को टीम वर्क अपनाने, मरीजों को व्यक्तिगत देखभाल और ध्यान देने तथा गुणवत्तापूर्ण एवं सम्मानजनक सेवा का स्वभाव विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह भी सलाह दी कि प्रशंसा खुलकर व्यक्त की जानी चाहिए, जबकि गलतियों को व्यक्तिगत और रचनात्मक तरीके से संबोधित किया जाना चाहिए। सत्र का समापन सामूहिक विकास और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए टीम के भीतर ज्ञान, कौशल और प्रतिभाओं को साझा करने पर ज़ोर देने के साथ हुआ।

एकता में शक्ति है; टीमवर्क वह ताकत है जो असंभव को संभव बना देती है।

एससीटीआईएमएसटी खेल प्रकोष्ठ द्वारा टूर्नामेंट का आयोजन

एससीटीआईएमएसटी के खेल प्रकोष्ठ द्वारा 25 सितंबर 2025 को एक उत्साहपूर्ण बैडमिंटन टूर्नामेंट का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य संस्थान के कर्मचारियों और छात्रों के बीच खेल भावना को बढ़ावा देना, शारीरिक स्वास्थ्य के महत्व को रेखांकित करना तथा आपसी सौहार्द को मजबूत करना था।

टूर्नामेंट में विभिन्न वर्गों के प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और पूरे दिन रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट खेल कौशल, अनुशासन और खेल भावना का प्रदर्शन किया। दर्शकों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने प्रतियोगिता के माहौल को और भी जीवंत बना दिया। कार्यक्रम के अंत में विजेताओं और उपविजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए तथा सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की गई ।

यह टूर्नामेंट न केवल खेल प्रतिस्पर्धा का मंच बना, बल्कि संस्थान के सदस्यों को एक साथ जोड़ने और स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करने में भी सफल रहा।

टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन

एससीटीआईएमएसटी स्पोर्ट्स सेल (एसएससी) ने संस्थान के खेल आयोजन 2025 के तहत बीएमटी विंग में दो शानदार खेल आयोजनों का आयोजन किया (6 अक्टूबर को टेबल टेनिस और 10 अक्टूबर 2025 को वॉलीबॉल)। पहले सर्व से लेकर अंतिम पॉइंट तक, वातावरण उत्साह, सौहार्द और जोशपूर्ण प्रतिस्पर्धा से भरा रहा।

छात्र, कर्मचारी और संकाय सदस्य न केवल प्रतिस्पर्धा करने के लिए, बल्कि एक-दूसरे से जुड़ने के लिए भी एकजुट हुए - जो सर्वांगीण विकास, टीम वर्क और संस्थागत एकता के प्रति एससीटीआईएमएसटी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ये टूर्नामेंट केवल जीतने के बारे में नहीं थे - बल्कि भाग लेने, जुड़ने और एससीटीआईएमएसटी की भावना का जश्न मनाने के बारे में थे

वॉलीबॉल एससीटीआईएमएसटी द्वारा वॉलीबॉल टूर्नामेंट का आयोजन

एससीटीआईएमएसटी के खेल प्रकोष्ठ द्वारा वॉलीबॉल टूर्नामेंट का सफल आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों और कर्मचारियों में शारीरिक फिटनेस, टीम भावना तथा खेल भावना को प्रोत्साहित करना था। टूर्नामेंट में विभिन्न विभागों की टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी मुकाबले रोमांचक रहे और खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट समन्वय, अनुशासन एवं खेल कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। दर्शकों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने पूरे आयोजन को जीवंत बना दिया। कार्यक्रम के अंत में विजेता एवं उपविजेता टीमों को सम्मानित किया गया। यह वॉलीबॉल टूर्नामेंट आपसी सहयोग, एकता और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने की दिशा में एक सफल पहल सिद्ध हुआ।

4 अक्टूबर 2025 को, एससीटीआईएमएसटी खेल प्रकोष्ठ ने वार्षिक खेल सम्मेलन 2025 के अंतर्गत पलायम स्थित विश्वविद्यालय स्टेडियम में खेल उत्कृष्टता का एक शानदार आयोजन किया। इस कार्यक्रम में एक रोमांचक क्रिकेट टूर्नामेंट और कई खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों के उत्साही प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन बीएमटी विंग के प्रमुख डॉ. हरिकृष्ण वर्मा ने एससीटीआईएमएसटी के खेल प्रकोष्ठ के अध्यक्ष डॉ. वर्गीस टी. पणिक्कर की उपस्थिति में किया। ज़ोरदार दौड़ से लेकर रणनीतिक क्रिकेट खेल तक, यह दिन खेल भावना, टीम वर्क और खेल भावना का एक जीवंत प्रदर्शन था। स्टेडियम ऊर्जा से भरपूर था क्योंकि छात्र और कर्मचारी अपने साथियों का उत्साहवर्धन कर रहे थे, जिससे एकता और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा मिला

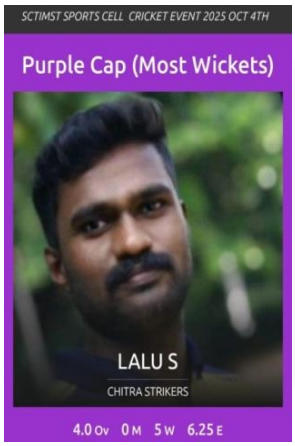

वार्षिक खेल सम्मेलन 2025 के शानदार आयोजनों के उपलक्ष्य में, एससीटीआईएमएसटी खेल प्रकोष्ठ ने 13 अक्टूबर 2025 को कुमारपुरम स्थित केएसबीसी मैदान पर एक फुटबॉल टूर्नामेंट का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन में विभिन्न विभागों के उत्साही प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपनी खेल प्रतिभा, टीम वर्क और खेल भावना का प्रदर्शन किया। फुटबॉल टूर्नामेंट बेहद सफल रहा और इसने एससीटीआईएमएसटी वार्षिक खेल सम्मेलन की पहचान बन चुकी एकता और खेल भावना को मजबूत किया।

शतरंज टूर्नामेंट 2025 – रणनीति और खेल भावना का एक दिन

संस्थान के खेल आयोजनों 2025 के अंतर्गत, एससीटीआईएमएसटी खेल प्रकोष्ठ (एसएससी) ने 29 सितंबर 2025 को एससीटीआईएमएसटी के स्वास्थ्य भवन में एक शतरंज टूर्नामेंट का गर्वपूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन में छात्रों और कर्मचारियों दोनों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही, जिससे बौद्धिक चुनौती और सौहार्द का जीवंत वातावरण बना। टूर्नामेंट का उद्घाटन एससीटीआईएमएसटी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने सीवीटीएस के प्रोफेसर और एससीटीआईएमएसटी के खेल प्रकोष्ठ के अध्यक्ष डॉ. वर्गीस टी पणिकर और कार्डियोलॉजी के प्रोफेसर डॉ. नारायणन नंबूदरी के.के. की उपस्थिति में किया।

रणनीतिक दांव-पेंचों पर खिलाड़ियों के दिमाग आपस में उलझे रहे और टूर्नामेंट ने सभी प्रतिभागियों की तीक्ष्ण बुद्धि और खेल भावना का प्रदर्शन किया।

एसएससी विजेताओं को हार्दिक बधाई देता है और प्रत्येक प्रतिभागी और समर्थक का तहे दिल से आभार व्यक्त करता है जिन्होंने इस दिन को वास्तव में यादगार बनाया।

विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह समारोह पर रिपोर्ट

विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह 2025, जो 18 से 24 नवंबर तक विश्व स्तर पर मनाया गया, "अभी कार्रवाई करें: अपने वर्तमान की रक्षा करें, अपने भविष्य को सुरक्षित करें" के प्रभावशाली विषय के तहत मनाया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन, एफएओ, यूएनईपी और WOAH के चतुर्पक्षीय सहयोग के नेतृत्व में, इस वैश्विक अभियान का उद्देश्य रोगाणुरोधी प्रतिरोध से उत्पन्न गंभीर खतरे को उजागर करना और मानव स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा स्वास्थ्य, कृषि और पर्यावरण क्षेत्रों में एकीकृत कार्रवाई को प्रोत्साहित करना है। यह पहल स्वास्थ्यकर्मियों, छात्रों और समुदाय को रोगाणुरोधी दवाओं के जिम्मेदार उपयोग, संक्रमण की रोकथाम और टिकाऊ प्रथाओं के बारे में शिक्षित करने के लिए एक सशक्त मंच के रूप में कार्य करती है।

हमारे संस्थान ने 17/11 से 21/11/2025 तक शैक्षणिक, जागरूकता और रचनात्मक गतिविधियों की एक श्रृंखला के साथ विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह मनाया।

समारोह का शुभारंभ 17 नवंबर को निदेशक, एएमएसपी समिति के सदस्यों और सभी कर्मचारियों को विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह बैज वितरित करने के साथ हुआ, जो AMR जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक प्रतीकात्मक संकेत था। मरीजों के प्रतीक्षा क्षेत्रों में पोस्टर लगाए गए, साथ ही बैनर और बैज वितरण गतिविधियों का आयोजन किया गया जिससे सप्ताह की शुरुआत जीवंत तरीके से हुई।

18 नवंबर को एक मजेदार प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रारंभिक दौर के लिए 10 समूह और फाइनल के लिए 8 समूह बनाए गए थे। इस कार्यक्रम की मेजबानी पीडीसीसी की इंफेक्शन कंट्रोल रेजिडेंट डॉ. शिल्पा और आईसीएन की सुश्री प्रीना ने की। प्रतियोगिता के अंतर्गत स्लोगन प्रतियोगिता, रील निर्माण और पोस्टर प्रस्तुति का आयोजन किया गया।

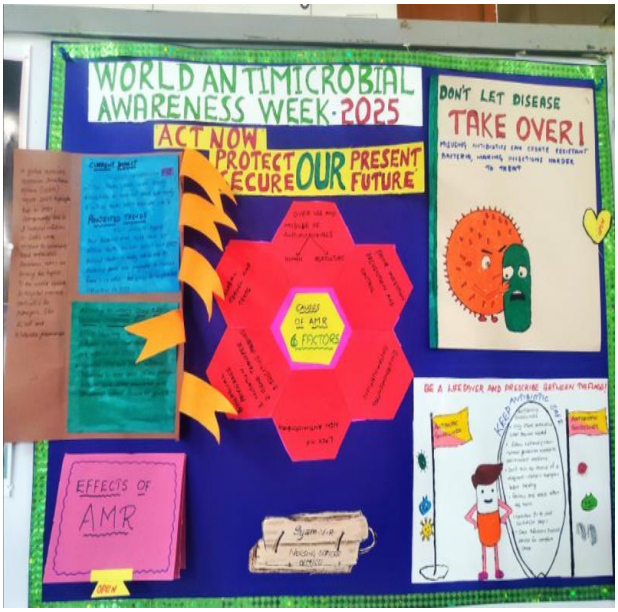

29 नवंबर 2025 को बीएमटी विंग में आयोजित "हृदय आपके हाथों में और आपकी स्क्रीन पर: विच्छेदन से आयाम तक" एक दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला

29 नवंबर 2025 को एससीटीआईएमएसटी के डीएम छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए "हृदय आपके हाथों में और आपकी स्क्रीन पर: विच्छेदन से आयाम तक" शीर्षक से एक दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला का आयोजन किया गया। 32 प्रतिभागियों में डीएम छात्र और कार्डियोलॉजी, कार्डियक एनेस्थीसिया, कार्डियोवैस्कुलर और थोरेसिक सर्जरी, पैथोलॉजी और न्यूरो एनेस्थीसिया विभागों के संकाय सदस्य शामिल थे। कार्यशाला के सुबह के सत्र का आयोजन श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग परिसर में नवनिर्मित स्किल्स एंड सिमुलेशन लैब (एसएसएल) में किया गया।

सत्रों का संचालन डॉ. हरिकृष्णन एस (प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, कार्डियोलॉजी विभाग), डॉ. अरुण गोपालकृष्णन (अतिरिक्त प्रोफेसर, कार्डियोलॉजी विभाग) और डॉ. दिनेश राजा पी (कार्डियक इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी में पोस्ट-डॉक्टोरल फेलो, कार्डियोलॉजी विभाग) ने किया। सत्र का उद्देश्य बूचड़खाने से प्राप्त सुअर के हृदय के नमूनों के साथ व्यावहारिक विच्छेदन का अनुभव प्रदान करना था। प्रतिभागियों को सुअर के हृदय को माध्यम बनाकर मानव हृदय की संरचना के महत्वपूर्ण बिंदुओं का विस्तार से अध्ययन करने का अवसर दिया गया।

दोपहर के सत्र में, बीएमटी विंग के सीडी ब्लॉक में स्थापित सुविधा केंद्र में, डीएम के छात्रों और संकाय सदस्यों ने स्टीरियोस्कोपिक 3-डी विच्छेदन सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए लगभग यथार्थवादी मानव हृदय संरचना पर चर्चा की। इस प्रदर्शन के लिए उपयोग किया गया 3-डी रेंडरिंग सॉफ्टवेयर टूल, गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज बार्टन हिल, त्रिवेंद्रम के छात्रों और संकाय सदस्यों के सहयोग से विकसित किया गया

एससीटीआईएमएसटी के संकाय सदस्यों ने सीटी और एमआरआई डेटा के आधार पर आवश्यकताओं और सुधारों के लिए इनपुट प्रदान किए। सत्र का संचालन डॉ. दिनेश राजा पी. ने किया। बीएमटी विंग की ओर से कार्यशाला के संचालन में डॉ. अरुण अनिरुधन (इंजीनियर एफ) और डॉ. सचिन जे शेनॉय (वैज्ञानिक जी) ने रसद संबंधी सहायता प्रदान की।

11वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 पर रिपोर्ट

एससीटीएमएसटी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के पवेलियन में आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। यह प्रदर्शनी 6 से 9 दिसंबर 2025 तक पंचकुला, चंडीगढ़ में आयोजित 11वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 के दौरान हुई। इस महोत्सव 2025 का विषय था 'विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत'। इस कार्यक्रम का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। कार्यक्रम में भारत सरकार के विज्ञान मंत्रालयों और विभागों तथा विभा के सहयोग से लगभग 2000 से 2500 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विभिन्न विद्यालयों, कॉलेजों के छात्रों और आम जनता सहित लगभग 2000 से 2500 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के दौरान एससीटीएमएसटी के स्टॉल का दौरा किया। इंजीनियर विनोदकुमार वी. - इंजीनियर जी, डॉ. जीजो राज - वैज्ञानिक डी, श्रीकांत एस. एल. कनिष्ठ वैज्ञानिक सहायक, श्री साजिन राज आर जी - तकनीकी सहायक (उपकरण) बी ने प्रदर्शनी के दौरान एससीटीआईएमएसटी का प्रतिनिधित्व किया।

एनआईटी कालीकट में आयोजित "स्वश्रय भारत 2025" में भागीदारी पर रिपोर्ट

स्वश्रय भारत 2025 – भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का एक उत्सव – 15 से 17 अक्टूबर 2025 तक राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) कालीकट, कोझिकोड, केरल में आयोजित किया गया। इसका आयोजन स्वदेशी विज्ञान आंदोलन – केरल (एसएसएम-के) द्वारा एनआईटी कालीकट के सहयोग से किया गया था।

कार्यक्रम का विषय था: ऊर्जा, पर्यावरण, उद्यमिता स्वश्रय भारत एक राष्ट्रीय स्तर का उत्सव है जिसका उद्देश्य भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को प्रदर्शित करना, नवाचार को बढ़ावा देना और अनुसंधान परिणामों के सामाजिक अनुप्रयोगों को प्रोत्साहित करना है।

इस कार्यक्रम में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शनियाँ, सेमिनार, हैकथॉन और छात्र-वैज्ञानिक संवाद आयोजित किए गए।

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम ने स्वश्रय भारत 2025 के विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी खंड में भाग लिया

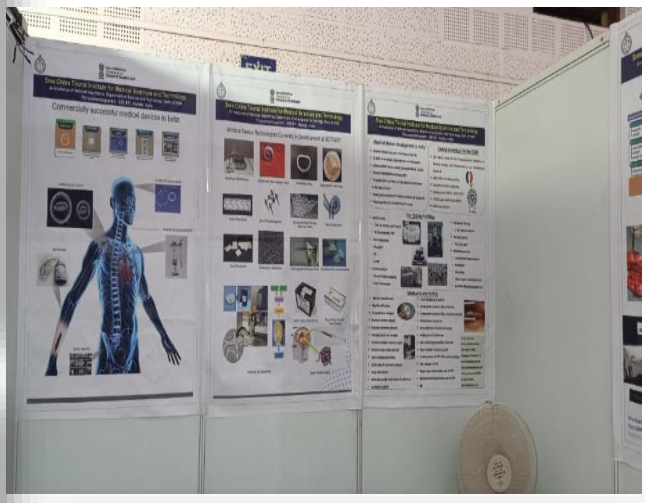

संस्थान की ओर से बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग (बीएमटी विंग) के निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:

- इंजीनियर अनूप गोपीनाथन – इंजीनियर डी, कृत्रिम आंतरिक अंग विभाग
- इंजीनियर प्रथ्युष एम. – फोरमैन (टूल रूम)
- डॉ. निषाद के. वी. – वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक (उपकरण, बायोसिरेमिक प्रयोगशाला)

एससीटीआईएमएसटी टीम ने बायोमेडिकल डिवाइस क्षेत्र में संस्थान के तकनीकी नवाचारों और अनुसंधान योगदानों को प्रदर्शित करने वाले एक प्रदर्शनी स्टॉल का प्रबंधन किया।

एससीटीआईएमएसटी के स्टॉल में राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न कार्यक्रमों के तहत संस्थान की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया, जिसमें स्वदेशी चिकित्सा उपकरण विकास पर विशेष जोर दिया गया।

"मैं हर नागरिक से, विशेष रूप से युवाओं से आग्रह करता हूँ कि वे राष्ट्र-निर्माण में भाग लें — जेट इंजन, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, उर्वरकों और अन्य महत्वपूर्ण तकनीकों में नवाचार करें और उन्हें स्वदेशी रूप से विकसित करें, ताकि हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण करें जहाँ भारत आत्मनिर्भर, शक्तिशाली और विश्व में सम्मानित स्थिति में खड़ा हो।"

- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

स्वच्छता ही सेवा 2025 पर रिपोर्ट: स्वच्छोत्सव

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) में स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत राष्ट्रव्यापी पहल के हिस्से के रूप में स्वच्छता ही सेवा 2025 (एसएचएस 2025) अभियान का आयोजन किया गया। "स्वच्छोत्सव: स्वच्छता और सामुदायिक भावना का उत्सव" शीर्षक वाला यह कार्यक्रम 17 सितंबर से 3 अक्टूबर 2025 तक आयोजित किया गया, जिसका समापन सत्र 6 अक्टूबर 2025 को हुआ।

इस वर्ष के अभियान में स्वच्छता और स्थिरता के दोहरे विषयों पर प्रकाश डाला गया, जिसमें प्रभावी ई-कचरा प्रबंधन के महत्व पर बल दिया गया। इसने संपूर्ण बीएमटी समुदाय - छात्रों, कर्मचारियों और संकाय - को पर्यावरण संबंधी जिम्मेदारी और नागरिक जागरूकता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से सार्थक, कार्रवाई-उन्मुख कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए एक साथ लाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2019 में शुरू किया गया स्वच्छ भारत मिशन, स्वच्छ और हरित भारत के निर्माण की दिशा में जनभागीदारी को प्रेरित करता रहता है। स्वच्छोत्सव समारोह के अंतर्गत, एससीटीआईएमएसटी ने निम्नलिखित लक्ष्य रखे:

1. **संस्थानों और सामुदायिक क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देना;**
2. **ई-कचरे के सुरक्षित प्रबंधन और निपटान के बारे में सदस्यों को शिक्षित और जागरूक करना;**
3. **कचरे के पृथक्करण, पुनर्चक्रण और कमी के प्रति व्यवहार परिवर्तन को प्रोत्साहित करना;**
4. **संवादात्मक, रचनात्मक और प्रतिस्पर्धी गतिविधियों के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना;**
5. **परिसर के उपेक्षित क्षेत्रों को उपयोगी और सुंदर स्थानों में परिवर्तित करना।**

इस अभियान को दो चरणों में चलाया गया:

- तैयारी चरण (17 सितंबर – 3 अक्टूबर 2025): जागरूकता पैदा करना, प्रतिज्ञाएँ लेना और प्रारंभिक अभियान चलाना।
- कार्यान्वयन चरण (3 अक्टूबर – 31 अक्टूबर 2025): स्वच्छता गतिविधियों का सुदृढ़ीकरण और परिणामों का दस्तावेजीकरण।

स्वच्छता शपथ

17 और 24 सितंबर 2025 को, बीएमटी विंग और अस्पताल विंग में, स्वच्छता शपथ के साथ अभियान का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी कर्मचारियों, संकाय सदस्यों और छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतिभागियों ने स्वच्छता बनाए रखने, अपने आसपास स्वच्छता का ध्यान रखने और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करने का संकल्प लिया।

व्यापक सफाई अभियान

केंद्र भर में कई विभागों - जिनमें स्टोर्स, परचेज़, टिशू कल्चर, बायो-सरफेस टेक्नोलॉजी, टिशू इंजीनियरिंग, डेंटल प्रोडक्ट्स और कॉम्बिनेशन डिवाइसेस शामिल हैं - में व्यापक सफाई अभियान चलाया गया, जिसमें सफाई से पहले और बाद के व्यापक सत्र आयोजित किए गए।

वृक्षारोपण गतिविधियाँ

संस्थान की सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए, "एक पेड़ माँ के नाम" विषय पर विभिन्न वृक्षारोपण गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

एससीटीआईएमएसटी में पीओएसएच अधिनियम 2013 का स्मरणोत्सव

पीओएसएच अधिनियम 2013 [कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013] के स्मरणोत्सव के उपलक्ष्य में, एससीटीआईएमएसटी ने 11 दिसंबर 2025 को "महिलाओं के अधिकारों को पुनर्परिभाषित करना: पीओएसएच अधिनियम की भूमिका" विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में एससीटीआईएमएसटी के कर्मचारियों और छात्रों की सक्रिय भागीदारी देखी गई, जो एक सुरक्षित, समावेशी और सम्मानजनक कार्यस्थल को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाती है। कार्यक्रम का शुभारंभ एससीटीआईएमएसटी की आंतरिक समिति की अध्यक्ष डॉ. जयश्री आर एस के स्वागत भाषण से हुआ, जिन्होंने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम में संस्थान और आंतरिक समिति की साझा जिम्मेदारी और जागरूकता के महत्व पर जोर दिया।

यह सत्र संवादात्मक था, जिसमें प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से चर्चाओं में भाग लिया और स्पष्टीकरण मांगे, जिससे विचारों और ज्ञान का सार्थक आदान-प्रदान हुआ। कार्यक्रम का समापन एससीटीआईएमएसटी की पीओएसएच अधिनियम के सिद्धांतों को बनाए रखने और सभी के लिए एक सुरक्षित, सम्मानजनक और न्यायसंगत कार्यस्थल सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता की पुष्टि के साथ हुआ। आईसी के सदस्य डॉ. जिस्सा वी. टी. ने धन्यवाद ज्ञापन दिया और संसाधन व्यक्ति और सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013, जिसे पीओएसएच अधिनियम के नाम से जाना जाता है, कार्यस्थल पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से बचाने के लिए बनाया गया एक भारतीय कानून है। यह अधिनियम 10 या अधिक कर्मचारियों वाले नियोक्ताओं को समयबद्ध तरीके से शिकायतों का समाधान करने के लिए एक आंतरिक समिति (आईसी) गठित करने का आदेश देता है।

एसपीबीएससी में नवीनीकृत कॉफी काउंटर 'कैफे सिन्नामन' का उद्घाटन समारोह 15-8-2025

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025 रिपोर्ट

इस वर्ष में भी हिन्दी दिवस तथा चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन दिनांक 14.09.2025 को माननीय गृह मंत्री जी की आध्यक्षता में संपन्न हुआ। श्री चित्रा संस्थान में दिनांक 18.09.2025 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के साथ हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025 का शुभारंभ किया गया

दिनांक 18.09.2025 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के लिए (i) मेरे कार्यालय में ओणम उत्सव (ii) भारतीय युवा और मीडिया (iii) महिलाओं का विवाह से पीछे हटना: स्वाभाविक प्रगति या सामाजिक प्रतिरोध? जैसे तीन विषय दिए गए थे जिनमें से किसी एक विषय पर निबंध लिखना था। दिनांक 19.09.2025 को हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था । इस प्रतियोगिता में 15 कर्मियों ने भाग लिया था।

दिनांक 20.09.2025 को 11.30 बजे से 12.00 बजे तक हिन्दी स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। "सड़क सुरक्षा" पर 05 स्लोगन लिखने के लिए विषय दिया गया था।

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया था। दिनांक 23.09.2025 को 12.00 बजे से 12.30 बजे तक आयोजित हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता में कुल 15 कर्मियों ने भाग लिया था

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

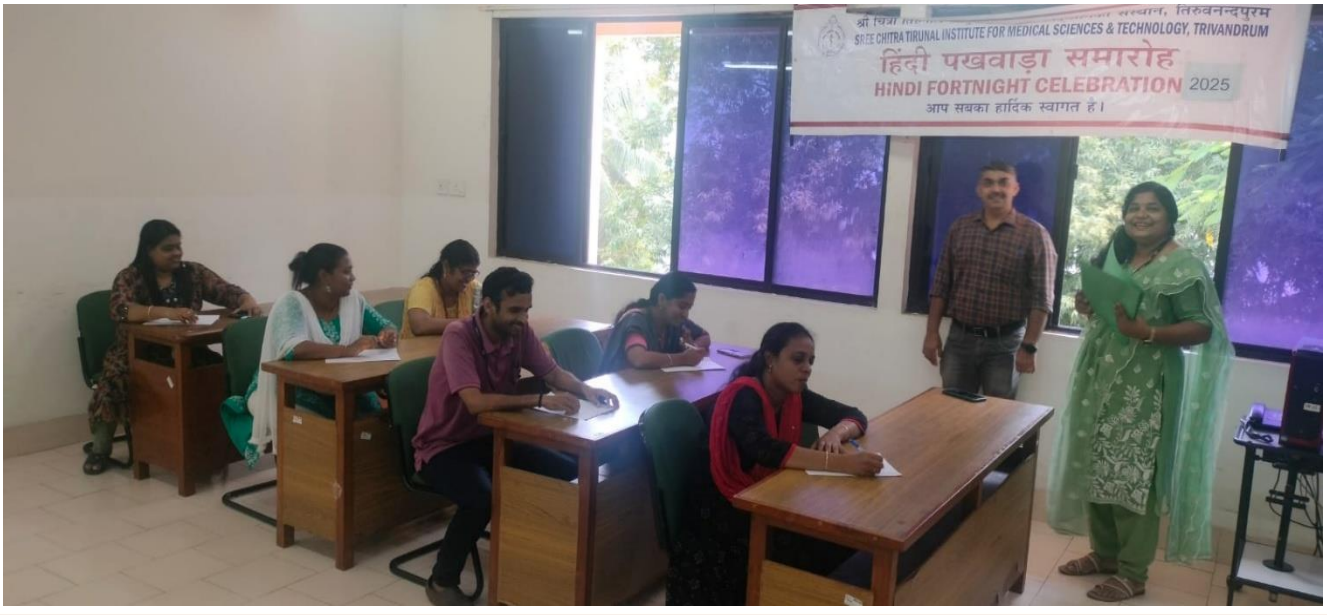

संस्थान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन दिवस, दिनांक 30 सितंबर 2025 को हिंदी टिप्पणी एवं प्रारूपण पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी में प्रशासनिक कार्यों के निष्पादन हेतु दक्षता बढ़ाना था।

इस कार्यशाला में केन्द्रीय कंद अनुसंधान संस्थान ,तिरुवनंतपुरम से राजभाषा सहायक श्रीमती राजश्री वी. ने विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता की। उन्होंने हिंदी टिप्पणी एवं प्रारूपण के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी, जिनमें सामान्य प्रारूप, प्रचलित सरकारी शब्दावली तथा व्यवहारिक उदाहरण शामिल थे।

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRU ITUTE FOR MEDICAL
CIENCES AND LOGY, TRIVANDRUM
ORKSHOP
सब का हार्दिक स्वागत"

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL
CIENCES AND TECHNOLOGY, TRIVANDRUM
हिंदी
HINDI RKSHOP
सब का हार्दिक स्वागत"

कार्यशाला
HIN ORKSHOP

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL
SCIENCES AND TECHNOLOGY, TRIVANDRUM

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL
SCIENCES AND TECHNOLOGY, TRIVANDRUM
हिंदी कार्यशाला

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
SREE CHITRA TIRUNAL INSTITUTE FOR MEDICAL

महिलाओं का विवाह से पीछे हटना : स्वाभाविक प्रगति या सामाजिक प्रतिरोध

डॉ. अमिता.आर, अतिरिक्त प्रोफेसर, ट्रांसप्यूजन चिकित्सा विभाग

प्रकृति का स्वाभाविक तत्व प्रजनन एवं प्रसरण पर निर्धारित है। इस आधार पर हर जीव-जाल में स्त्री एवं पुरुष लिंग पाया जाता है। स्त्री-पुरुष संकलन से नया जीवन शुरु होता है और प्रकृति का पुनः संगठन एवं विकास हाता है।

मनुष्य प्रकृति का एक अनोखा अंग है, जिसे प्रकृति ने बुद्धि एवं सोचने को क्षमता प्रदान की है। मनुष्य अपने कार्य को प्रतिक्रिया समझ सकता है और उसके आधार पर कार्यों में सुधार ला सकता है। प्रकृति का एक और स्वाभाविक तत्व यह है कि स्त्री लिंग नए जीवन का परिपालन करती है। स्त्री शरीर में ममता की भावना अवलंभित है। पुरुष स्त्री की देखबाल एवं सुरक्षा का उत्तरदायी है और पुरुष शरीर मज़बूत और दमदार है, ताकि हर स्त्री जो पुरुष के परिचय में आए, उसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी पुरुष पर होती है। स्त्री शरीर को इसलिए अबला कोमल इत्यादि कहा जाता है। प्रकृति में यह तत्व ना केवल जानवरों में, वल्कि पौधों में भी देखा जा सकता है। एक फूल को ही देख लिजिए, उसके सबसे अंदर वाली पाली स्त्री बीज़ होगी, पुरुष पाली हमेशा उस स्त्री पाली की बाहर उसे सुरक्षित करते हुए देखा जाता है।

जैसे - जैसे सामाज़ का विकास होता गया, पुरुष की अब स्त्री की सुरक्षा देना इतना अनिवार्य नहीं रहा, क्योंकि स्त्री आजकल अबला नहीं हैं। हर कार्य जो पुरुष कर सकता है, स्त्री भी कर सकती है। आकाश में विमान चलाना, समुद्र पर्यवेक्षण करना, क्रिकेट खेलना, रेल इन्जन चलाना, खुरानी करना, सब स्त्री के बस की बात बन चुकी है। एक नया जीवन भी वर्तमान में स्त्री के शरीर में ही विकसित होता है, लेकिन वह दिन दूर नहीं जब विज्ञान की प्रगति से यह पुरुष शरीर में भी संभव हो सकेगा। ममता की भावना, जो स्त्री में प्रकृतिदत्त समझा जाता था, अब पुरुषों में भी देखा जा सकता है। स्त्री और पुरुष आज़ कंदे से कंदा मिलाकर नए जीवन का परिपालन करते है। घर का परिपालन करना एक बढ़ी जिम्मेदारी है। ममता की भावना के साथ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण इस में बहुत महत्वपूर्ण है।

मिल-झुल कर काम करना, हिसाब किताब रखना, सामानों का आन-देन, उसकी गुणर्वता पर ध्यान रखना, एक क्षण पर ही अनेक कार्य पर नज़ारा रखना, यह सब स्त्री की स्वाभाविक क्षमता मानी जाती थी। इन सब कारणों से स्त्री या लड़की छोटी उम्र से ही पुरुष या लड़को से हर चीज़ में आगे रहती है, चाहे वह पढ़ने की बात हो, घर देखनी की बात, अपने भाई-बहनों की संभालने की बात, सुरक्षा की बात, इत्यादि, यह सब स्त्री के लिए स्वाभाविक है। लेकिन पुरुष, जो आज तक दमदार एवं तकातवर समझा जाता था, अब किसकी सुरक्षा देखे?

पुरुष शरीर से तकतवर होगा, लेकिन मन का भोला है, वह आज भी, सहारा ढूढ़ता है, जो उसकी माँ या बहन या बीवी हो सकती है।

लेकिन आज़ की नारी सशक्त एवं सक्षम है, अपना ख्याल रखने के लिए। उसे घर पालन करना, बच्चे पैदा करना, घर में रह कर सबका कहना सुनना, अपनी प्रगति पर लगाम डाल सकता है।

पुरुष जिस का आजकल अपने स्वाभाविक तत्व (दमदार, तकतवार) का समूह के लिए आवश्यक नहीं रहा, लेकिन झुकने के लिए तैयार नहीं हे। स्त्री को अपने तुल्य मानने के लिए तैयार नहीं है। अपनी ताकत और दम स्त्री पर दिखाना चाहता है। इसलिए आज़कल कोई भी समाचार पत्र उठा कर देख लिजिए, दस पंद्रह बलात्कार का विवरण, तो मिल ही जाएगा।

समूह की उठकर चिंतन करने का वक्त आ गया है, यह बलात्कार क्यो होता है, कौन करता है। यह वही पुरुष करता है जो अब भी प्राचीन युग को प्रकृति और मानसिक स्थिति में जी रहा है। यह सब देखकर महिलाओं का विवाह से पीछे हठना स्वाभाविक प्रगति का भाग है,एवं यह एक सामाजिक प्रतिरोध भी है।

स्त्री सक्षक्त एवं सक्षम है, वह अबला या कोमल नहीं। प्रजन्न और प्रसरण से भूमी भरी पड़ी है। स्त्री को अब इसमे समय व्यस्त करना प्रकृति के लिए भी हानिकारिक हो सकता है।

इन सभी कारण से महिलाओं का विवाह बंधन से पीछे हठना सामाजिक प्रतिरोध के साथ-साथ स्वाभाविक प्रगति एवं प्रकृति का तत्व बनता जा रहा है।

यह सभी लेख हिंदी पखवाड़ा समारोह दौरान प्रतियोगियों द्वारा प्रस्तुत व्यक्तिगत अभिव्यक्तिया है जिन्हे पुरस्कार दिया गया है

भारतीय युवा और मीडिया

सुश्री कावेरी बी. एस. , उच्च श्रेणी क्लर्क – बी

परिचय: हमारी भारत की युवा पीढ़ी में बडते हुए सोशल मीडिया के प्रभाव एक बडी समस्या की ओर इशारा करता है। हमारी युवा पीढ़ी जो हमारे भारत का भविष्य है, आखिर क्यों इस मीडिया के गिरपत में फँस गएँ है? आखिर इसका क्या कारण हो सकता है? क्या इसका कुसुखार सिर्फ मीडिया को ही बताया जा सकता है या नहीं। **सोशल मीडिया का प्रभाव की शुरुआत:** हमारे भारत में 2004 से ही ओरकुट जैसे एक सोशल नेटवर्क का शुरुआत हुआ था। यह वेबसाइट बहुत जल्दी ही हमारे भारत की युवा पीढ़ी की अपने ओर खींचने लगा। इसमे उपयोगकर्ताओं को अपने नाम पर प्रोफाईल बनाने और दूसरे लोगों से बात करने की भी सुविधा प्रधान की गई। बहुत जल्द ही भारत में इसकी उपयोगकर्ताओं का संख्या बढने लगा। सभी युवा पीढ़ी अपने काम के बीच ही ओरकुट में अपना समय व्यस्त करन् लगा। फिर 2007 के बाद भारत में फेसबुक की शुरुआत हुई। इसने अपने आप मे बहुत बड़ा आँदोलन रचा। फेसबुक के माध्यम से उपयोगकर्ताओं अपना फोटोंस अपलोड कर सकता है, अपने दोस्तों के साथ खूब बातचीत कर सकता है और अपने परिवार से ही नहीं बल्कि इस विश्व में किसी से भी बात कर सकता है और किसी से भी दोस्ती भी बना सकता था। इस तरह फेसबुक ने हमारे भारत की किशोर और युवा पीढ़ी को अपने चंगुल में फँसा लिया। उसकी गिरफत से मुक्ती पाना मुश्किल ही नहीं बल्कि ना-मुम्किन था। मीडिया की चमक इतनी अधिक थी, जिसके कारण अपनी युवा पीढ़ी हमेशा अपने मोबाइल या कंप्यूटर की स्क्रीन के अंदर से आँख उठाकर देखना नहीं चाहती थी। उनके सामने की दुनिया में क्या हो रहा है, उसके बारे में युवाओं को कुछ भी पता नहीं था।

मीडिया के प्रभाव – सकारात्मक या नकारात्मक: मैं यह नहीं कहती कि मीडिया का प्रभाव युवा पीढ़ी के लिए अच्छा नहीं है। इसके दो प्रकार के प्रभाव होते हैं। इसका सकारात्मक प्रभाव भी बहुत है। जैसे, युवा पीढ़ी इस विश्व में दिन भर होने वाली घटनाओं को दूर के किसी कोने में रहकर भी जान सकते हैं। कई युवाओं के लिए यह एक रोजगार भी दे सकता है। कई युवा फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब के माध्यम से अपने चैनल की शुरुआत करके लाखों रुपए कमा रहे हैं, जिससे उनका परिवार सुख से जी सकता है। फेसबुक और इनस्टग्राम के द्वारा हम कई नई बात सीख सकते हे, जैसे पकवान बनाना, खिलौने बनाना, बल्कि जो औरतें घर पर ही बैठे है उनके लिए यह मीडिया कई सुविधाएँ प्रदान करती है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम अपने बच्चों और माता-पिताओं को देश किसी कोने से भी देख सकते है और उनसे बात भी कर सकते है। मगर इसकी सकारात्मक प्रभाव से दस गुना है इसका नकारात्मक प्रभाव। अब सोश्यल मीडिया फेंक न्यूज़ों से भरा है, जो लोगें में गलत इनफोरमेशन जल्दी-जल्दी बाँढते है। इससे हमारे युवा पीढ़ी के सोच-विचार बदल रहे है।

मीडिया में कई लोग अपने जीवन की कई तलों को दिखाते है, जिसमें सब कुछ सच नहीं होता। वह लोग लाइक और टिप्पणियों के लिए फेंक वीडियों बनाते है। हमारे युवा पीढ़ी इस तरह की वीडियों देखकर अपने जीवन की तुलना उनसे करते है। और उन्हें लगता है कि उनके जीवन का मूल्य दूसरों की लाइक और टिप्पणियों पर निर्भर है। जब उन्हें ज्यादा फॉलोअर्स होने से खुशी मिलती है, वैसे ही जब उनकी फॉलोअर्स की संख्या कम होती है, हमारे युवा पीढ़ी उसे सह नहीं सकते। उन्हें लगता है कि उनका जीवन का मूल्य ही खत्म हो गया है और वे अपने आप को खत्म करने के बारे में सोचने लगते हैं। इस तरह की कई खबरें हम दिन भर दिन न्यूज़ में देखते हैं। हमारे हज़ारों युवा लोग खुदकुशी कर चुके हैं। वे अपने परिवार के बारे में कुछ नहीं सोचते।

इस तरह सोशल मीडिया हमारे युवाओं को अपने परिवार से अलग कर देता है। उनकी आँखें सोशल मीडिया की चमक से अंधी हो गई हैं। जब माँ-बाप उनके सोशल मीडिया के उपयोग पर कोई बाधा डालते हैं, तो वे माँ-बाप दुश्मन लगने लगते हैं। पैसों के लिए वे अपने परिवार को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। अब सोशल मीडिया में ब्लैक मैजिक का प्रसार कई लोग कर रहे हैं। वे अपनी युवा पीढ़ी के सोच-विचार को अपने नियंत्रण में करके उनसे कई बुरे काम करवाते हैं। खून देखकर उन्हें मज़ा आने लगता है। वे भगवान से दूर जाकर इस ब्लैक मैजिक के चक्र में फँस जाते हैं।

निष्कर्ष: अब सिर्फ हमारी युवा पीढ़ी ही नहीं, बल्कि हमारे किशोर भी मीडिया के प्रभाव में पड़ गए हैं। जब हमारे बच्चे छोटे होते हैं, तब उन्हें खाना खिलाने के लिए हम उनके हाथ में मोबाइल पकड़वा देते हैं। तब अपने बच्चों की खुशी देखकर हमें भी बहुत खुशी मिलती है। मगर जब वह किशोर बनते हैं, तो वहीं मीडिया यह उनकी एकमात्र दोस्त बन जाता है। उन्हें स्कूल में जाना और पढ़ना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। कई बच्चे अपने कमरे में अकेले होकर मीडिया देखते हैं। खाना खाने के लिए भी वे अपने परिवार के साथ नहीं बैठते, और जब माँ-बाप उन्हें टोकते हैं, तो वे माँ-बाप को दुश्मन समझने लगते हैं। इसलिए बचपन से ही बच्चों को

मीडिया के अच्छे और बुरे प्रभाव के बारे में समझा देना चाहिए। माँ-बाप को भी अपने मोबाइल की दुनिया से बाहर निकलकर अपने बच्चों के लिए समय समय निकालना चाहिए। बच्चों से ही परिवार की भलाई होती है। परिवार से ही समाज की भलाई होती है और समाज से ही हमारे देश की प्रगति जुड़ी है। इसलिए चलो हम मिल-जुलकर अपनी युवा पीढ़ी को बचाएँ और मीडिया के चंगुल से बचने में उनकी सहायता करें। अपने बच्चों को बताएँ कि परिवार ही उनका एकमात्र सहारा है।

महिलाओं का विवाह से पीछे हटना : स्वाभाविक प्रगति या सामाजिक प्रतिरोध

सुश्री दीपा एल एस, कार्यपालक सहायक, वित्त एवं लेखा प्रभाग

आज हम लोग कहते हैं कि युवा मॉडर्न हैं। हाँ, इस युग में महिलाओं का विवाह से पीछे हटना प्राचीन काल से ही अधिक है। मेरी राय यह है कि आज स्त्रियाँ अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हैं। वे अपनी वैल्यू पूरी तरह समझ सकती हैं। इसका एक बहुत बड़ा कारण है अच्छी शिक्षा। एक विवेकशील स्त्री आज सपने देखकर बढ़ रही है। बचपन से ही आज एक लड़की के अपने सपने होते हैं। वह चाहती है कि उसे क्या चाहिए – फिल्म स्टार, डॉक्टर, इंजीनियर, कंप्यूटर प्रोग्रामर बनने का सपना देखकर ही आज की लड़कियाँ बढ़ रही हैं।

आज की लड़कियाँ सबसे पहले अपने इन सपनों को पूरा करने की कोशिश करती हैं, क्योंकि वे अपनी माँ, दादी की तरह सिर्फ घर को संभालकर, घर की नौकरानी बनकर रहना नहीं चाहतीं। आज की लड़कियाँ यह भी जानती हैं कि अठारह वर्ष की उम्र में दादी और माँ का विवाह हुआ, तो उन्हें क्या मिला – घर का काम करना, लोगों की सुनना और वह सब कुछ सहन करना। आज की स्त्री यह जानकर पहले अपने विद्याभ्यास को अच्छी तरह पूरा करना चाहती है, फिर अपने सपनों के अनुसार डॉक्टर, इंजीनियर या अन्य अच्छे पेशे में अपनी मेहनत करना चाहती है। वह अपने पैरों पर खड़ी होकर अपनी ज़िंदगी को आगे बढ़ाती है। यही आज महिलाओं का विवाह से पीछे हटने का कारण है, लेकिन ऐसा करने से यह कोई स्वाभाविक प्रगति या सामाजिक प्रतिरोध नहीं है।

आज एक महिला अपने मूल्य जानती है, इसलिए वह जानती है कि समाज में स्त्री और पुरुष का स्थान तुल्य है। इसके अनुसार, वह पहले अच्छी तरह पढ़कर काम पाने के बाद ही विवाह के बारे में सोचती है। आज का समाज पहले से भी खराब है। आज ऑफिस, स्कूल, अस्पताल सभी जगह स्त्रियों को छेड़ने या उपद्रव करने वाले लोग हैं। इससे लड़ने के लिए आज सभी स्थानों में स्कूल या ऑफिस में महिला रक्षा स्कीम्स हैं। आज महिलाओं का विवाह से पीछे हटना कोई सामाजिक प्रतिरोध नहीं है, क्योंकि सबसे पहले अच्छी पढ़ाई, अच्छा काम करके, विवाह कर अच्छे से बच्चे पैदा करने और समाज में जीने वाले लोग इसके उदाहरण हैं।

हमारे इस इंस्टिट्यूट में ही देखो – एक अस्पताल है, उसमें स्त्रियाँ है, वहाँ डेप्यूटी रजिस्ट्रार, वित्त विभाग, एडमिनिस्ट्रेशन, अस्पताल में काम करने वाले कितने डॉक्टर्स और नर्स सभी अपने मूल्य को पहचानकर अपने पैरों पर खड़े होकर ही अपनी दुनिया बनाने वाली महिलाएँ हैं। उन्हें भी इस क्षेत्र में आने के लिए बहुत सहनशीलता दिखानी पड़ी होगी, लेकिन उन्होंने अपने आत्मबल के बल से अपने अंदर की शक्ति को उड़ाया। इसलिए ही उन्हें सामाजिक प्रतिरोध को तोड़कर अच्छे और उन्नत स्थान हासिल करना पड़ा।

मुझे आज की महिलाओं को यही उदाहरण देते हुए यही कहना है कि पहले सपने देखो, पहले तय करो कि हमें क्या बनना है, और उसके पीछे भागो – डॉक्टर, नर्स, पायलट या कोई भी काम। हमें कोई काम दूर नहीं है; अगर हमें हासिल करना है, तो हमें करना चाहिए। शादी और परिवार बाद में आएंगे। पहले अपने पैरों पर खड़े रहो, उसके बाद शादी, बच्चे, पति सब मिल जाएंगे। सभी सामाजिक प्रतिरोध अपने आप दूर हो जाएंगे।

आज की लड़कियों के मन में यही बात है कि वे अपनी माँ, दादी की तरह घर की नौकरानी नहीं बनना चाहतीं। उन्हें उड़ना है। यह आज की हर लड़की जानती है। इसलिए ही आज महिलाएँ विवाह से पीछे हट रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अपनी दुनिया बनाने में समय लगा रही हैं। उसके बाद सबकुछ होगा, उसे सबकुछ मिल जाएगा, यह वे अच्छी तरह जानती हैं, मेरी तरह।

एससीटीआईएमएसटी को टोलिक पुरस्कार – राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की सराहना

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान को **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टोलिक)** के अंतर्गत राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उल्लेखनीय सम्मान प्राप्त हुआ है।

यह उपलब्धि संस्थान द्वारा राजभाषा नीति के सतत एवं सुव्यवस्थित अनुपालन का प्रमाण है।

- संस्थान की हिंदी पत्रिका **"चित्रलेखा"** को उसकी विषयवस्तु, प्रस्तुति एवं साहित्यिक योगदान के लिए **विशेष उल्लेख** प्राप्त हुआ।
- राजभाषा हिंदी के समग्र कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए एससीटीआईएमएसटी को **श्रेष्ठ राजभाषा प्रदर्शन** हेतु **विशेष उल्लेख** प्रदान किया गया।

टोलिक पुरस्कारों के अंतर्गत एससीटीआईएमएसटी की निम्नलिखित उपलब्धियों को मान्यता प्रदान की गई:

हिंदी निबंध प्रतियोगिता में **द्वितीय पुरस्कार** श्रीमती दीपा एल. एस., कार्यकारी सहायक (लेखा)

हिंदी टंकण प्रतियोगिता में **सांत्वना पुरस्कार** श्री विष्णु प्रसाद, यूडीसी-बी (प्रशासन)

हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता में **सांत्वना पुरस्कार** श्री देवू जी., बहुउद्देशीय कर्मचारी (आउटसोर्स्ड)

कला और शिल्प: 3-डी पेपर क्रिसमस ट्री

सुश्री मिस्सी एस. एस. (प्रशिक्षु स्नातक – लाइब्रेरी)

आवश्यक सामग्री:

1.हरा कागज़ (क्राफ्ट पेपर)
2.कैंची
3.गोंद स्टिक या तरल गोंद (आवश्यकतानुसार)
4.पैमाना
5.पेंसिल

विधि: हरे कागज़ का एक चौकोर टुकड़ा लें। यदि आपके पास चौकोर कागज़ नहीं है, तो एक A4 शीट लें। शीट के एक किनारे को मोड़कर विपरीत किनारे से मिलाएँ और अतिरिक्त भाग को काट दें।

आधार परतें मोड़ें: चौकोर कागज़ को तिरछे आधे में मोड़ें ताकि एक त्रिकोण बन जाए। इसे खोलें और दूसरी दिशा में तिरछे मोड़ें, जिससे केंद्र में एक-दूसरे को काटती हुई सिलवटें बन जाएँ। इस प्रकार मोड़ें कि चौकोर कागज़ पर बनी सिलवटें तारा (एस्टरिस्क *) के चिन्ह जैसी दिखाई दें। ये मोड़ बाद में पेड़ का आकार देने में सहायता करते हैं।

मोड़ना (फोल्डिंग): कागज़ के किसी भी दो विपरीत कोनों को केंद्र की ओर एकत्र करें। उन्हें उसी स्थिति में पकड़े रखते हुए, बाएँ और दाएँ किनारों को अंदर की ओर दबाएँ। अब इसे समतल सतह पर दबाकर रखें, ताकि यह चौकोर हीरे (डायमंड) के आकार में आ जाए। इससे चार शंकु (कोन) बनेंगे। उन्हें समान रूप से चपटा कर लें। प्रत्येक चपटा किया गया शंकु 8 त्रिकोण देगा। नीचे की ओर (संरचना के सबसे चौड़े भाग) से बाहर निकले अतिरिक्त कागज़ को काट दें, ताकि आधार समतल हो जाए और संरचना

अपने आप खड़ी रह सके। त्रिकोणों को समान रूप से बाँटें—दोनों ओर 4-4। अब 3 समानांतर कट लगाएँ—सबसे लंबा कट आधार पर और सबसे छोटा कट उसके ऊपर। ध्यान रखें कि कट पूरी तरह बीच तक न जाए। अब प्रत्येक कटे हुए हिस्से पर कागज़ को नीचे की ओर समकोण (राइट एंगल) में मोड़ें। यही प्रक्रिया सभी 8 त्रिकोणों पर दोहराएँ। आपका **3-डी पेपर क्रिसमस ट्री** तैयार है! 🎄

सुसज्जित अलंकृत फ्रेम में रंग-बिरंगी थ्रेड आर्ट

सुश्री जैस्मिन ज़करियास [नर्सिंग अधिकारी – बी],
(कार्डियक सर्जरी आईसीयू)

पेंसिल रेखाचित्र

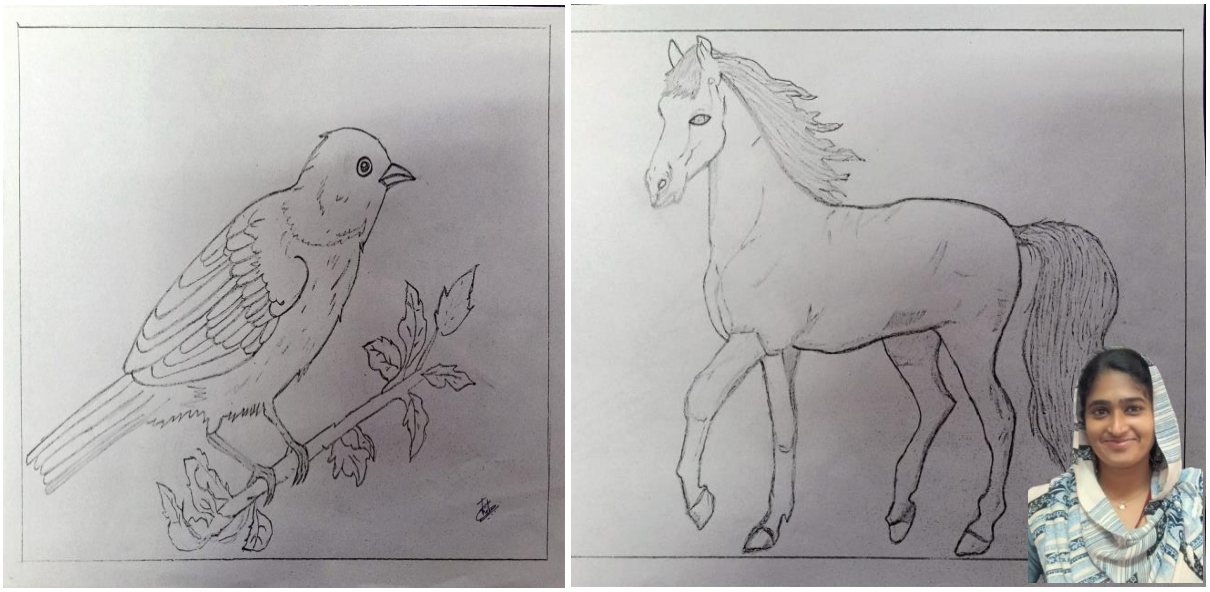

सुश्री शबनम (प्रशिक्षु स्नातक – लाइब्रेरी साइंस)

कबाड़ से कारीगरी

अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ

"प्रकृति में 'कचरा' जैसी कोई चीज़ नहीं होती; प्रकृति में कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता।"
- डेविड सुज़ुकी

विस्तृत यात्रा प्रतिवेदन: कश्मीर से ऐतिहासिक और आज के अवलोकन

परिचय: कश्मीर घाटी में अपनी हाल की यात्रा के दौरान, मुझे कई ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जगहों पर जाने का मौका मिला—लाल चौक, गुलमर्ग, पहलगाम, डल झील, शंकराचार्य मंदिर और अनंतनाग मंदिर। यह रिपोर्ट हर जगह के ऐतिहासिक बैकग्राउंड, मौजूदा स्थिति और यात्रा के अनुभवों पर मेरे अवलोकन को डॉक्यूमेंट करती है, जिसका मकसद कश्मीर के हमेशा रहने वाले आकर्षण और बदलाव की एक पूरी तस्वीर पेश करना है।

1. लाल चौक, श्रीनगर

ऐतिहासिक अवलोकन

लाल चौक, जिसका शाब्दिक अर्थ है "रेड स्क्वायर," का नाम वामपंथी राजनीतिक नेताओं ने मॉस्को के रेड स्क्वायर से प्रेरित होकर रखा था। श्रीनगर के बीच में स्थित, यह लंबे समय से एक राजनीतिक केंद्र रहा है:

- जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और शेख अब्दुल्ला जैसे नेताओं ने यहां रैलियों को संबोधित किया।
- यह महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं का केंद्र रहा है, खासकर संघर्ष और अशांति के समय में।

अभी की स्थिति

- व्यावसायिक केंद्र: अब यह एक चहल-पहल वाला मार्केटप्लेस है जहाँ हस्तशिल्प, सूखे मेवे और पारंपरिक कश्मीरी उत्पादों की दुकानें हैं।
- शहरी नवीकरण: नवीकरण की कोशिशों से यह इलाका सुंदर हो गया है, खासकर मशहूर घंटाघर (क्लॉक टॉवर) के आसपास।

यात्रा अनुभव

लाल चौक से गुज़रते हुए ऐसा लगा जैसे कश्मीर के अतीत और आज की जीती-जागती कहानी देख रहे हों। मार्केटप्लेस में रौनक थी, और लोकल लोग अपने अनुभव शेयर करने के लिए उत्सुक थे। यह चौक मज़बूती और नवीनीकरण दोनों को दिखाता है।

2. गुलमर्ग – फूलों का मैदान

ऐतिहासिक अवलोकन

पहले इसका नाम गौरीमर्ग था, लेकिन 16वीं सदी में सुल्तान यूसुफ शाह चक ने इसका नाम बदलकर गुलमर्ग कर दिया। जहाँगीर जैसे मुगल बादशाहों का पसंदीदा। ब्रिटिश कॉलोनियल पीरियड के दौरान यह गर्मियों में घूमने की जगह बन गया, और यहाँ भारत का पहला गोल्फ कोर्स बनाया गया।

अभी की स्थिति

साहसिक गंतव्य: यहाँ मशहूर गुलमर्ग गोंडोला है, जो दुनिया की सबसे ऊँची केबल कारों में से एक है।

साल भर टूरिज्म: सर्दियों में स्कीइंग और गर्मियों में जंगली फूलों के मैदान दुनिया भर के टूरिस्ट को खींचते हैं।

आधुनिक बुनियादी ढांचे: सड़कों, रहने की जगह और हॉस्पिटैलिटी सर्विस में बड़े सुधार हुए हैं।

गोंडोला राइड से हिमालय के शानदार नज़ारे दिखते थे, जबकि लोकल लोगों से बातचीत ने एक्सपीरियंस को सच में अच्छा और यादगार बना दिया।

यात्रा अनुभव

गुलमर्ग देखने में बहुत अच्छा था—बर्फ से ढकी चोटियों से लेकर हरे-भरे घास के मैदान तक।

3. पहलगाम – चरवाहों की घाटी

ऐतिहासिक अवलोकन

"पहलगाम" नाम का मतलब है "चरवाहों का गाँव", जो गुज्जरों और बकरवालों की परंपराओं से जुड़ा है।

धार्मिक महत्व: पवित्र अमरनाथ यात्रा की शुरुआती जगह।

ब्रिटिश काल में एक रिट्रीट के तौर पर लोकप्रियता हुआ, और एक टूरिज्म और आध्यात्मिक हब के तौर पर फल-फूल रहा है।

अभी की स्थिति

नेचर और एडवेंचर: रिवर राफ्टिंग, ट्रेकिंग और बेताब वैली और अरु वैली की यात्रा जैसी एक्टिविटीज़।

तीर्थयात्रा हब: अमरनाथ यात्रा के लिए बेस कैंप का काम करता है।

आकर्षण बनाए रखना: बढ़ते टूरिज्म के बावजूद, पहलगाम ने अपनी सुंदर शांति और कल्चरल सार को बनाए रखा

यात्रा अनुभव

पहलगाम में मेरा एक्सपीरियंस नेचुरल ब्यूटी और कल्चरल वाइब्रेंस का मिक्स था। लिद्दर नदी की आवाज़, घास के मैदान और लोकल मार्केट ने एक सुंदर और शांत माहौल बना दिया।

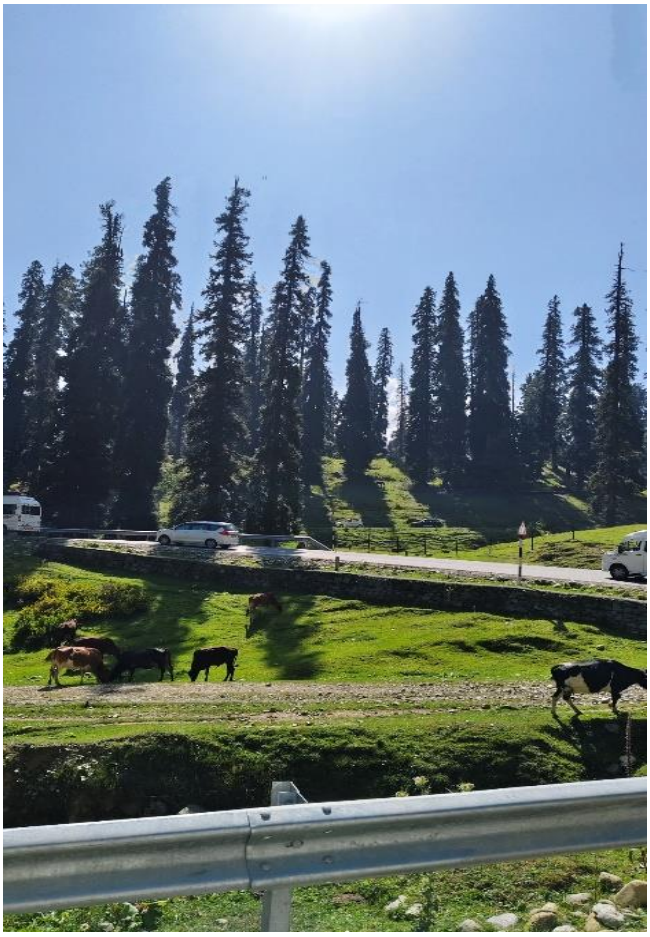

POCO
J&K
2024/9/16 10:30

POCO

4. अनंतनाग मंदिर – एक भुला दिया गया आध्यात्मिक गहना

ऐतिहासिक अवलोकन

अनंतनाग, कश्मीर की सबसे पुरानी शहरी बस्तियों में से एक है, जहाँ कई पुराने मंदिर हैं, जिनमें अनंतनाग झरने पर शिव मंदिर भी शामिल है, जिसे स्थानीय लोग नाग बल या अनंतनाग मंदिर के नाम से जानते हैं।

माना जाता है कि इस मंदिर की शुरुआत वैदिक काल से हुई है और यह पवित्र अनंतनाग झरने से जुड़ा है, जिससे इस शहर का नाम पड़ा है। कभी कश्मीरी पंडितों के लिए एक खास तीर्थस्थल रहा यह मंदिर, लड़ाई से पहले के कश्मीर की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को दिखाता है।

अभी की स्थिति

आध्यात्मिक जगह: हालाँकि आज यहाँ उतनी भीड़ नहीं है, फिर भी यह मंदिर पूजा और ऐतिहासिक दिलचस्पी की एक ज़रूरी जगह बना हुआ है।

सांस्कृतिक बचाव: कुछ मरम्मत का काम किया गया है, और ऐसी विरासत वाली जगहों को बचाने के बारे में जागरूकता बढ़ रही है।

आस-पास का प्राकृतिक माहौल: मंदिर एक शांत झरने के पास है, जो चिनार के पेड़ों और शांत नज़ारों से घिरा है।

यात्रा अनुभव

अनंतनाग मंदिर जाना एक शांत और सोचने पर मजबूर करने वाला एक्सपीरियंस था। कलकल करता झरना, पुराने पत्थर की बनावट और शांत माहौल ने हमेशा रहने वाली आध्यात्मिकता का माहौल बनाया। मुझे कश्मीर के अलग-अलग लेयर वाले इतिहास से गहरा जुड़ाव महसूस हुआ, क्योंकि यह कम जानी-मानी जगह चुपचाप एक अच्छे अतीत और कल्चरल रिवाइवल की उम्मीद की कहानी कहती है।

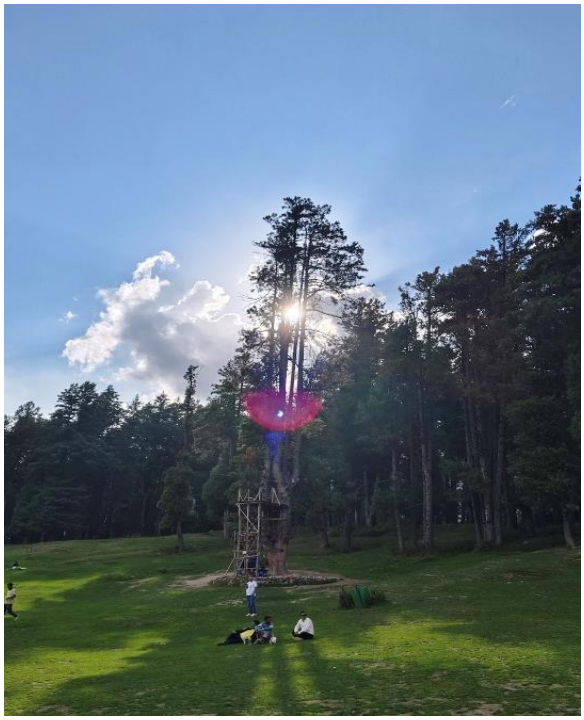

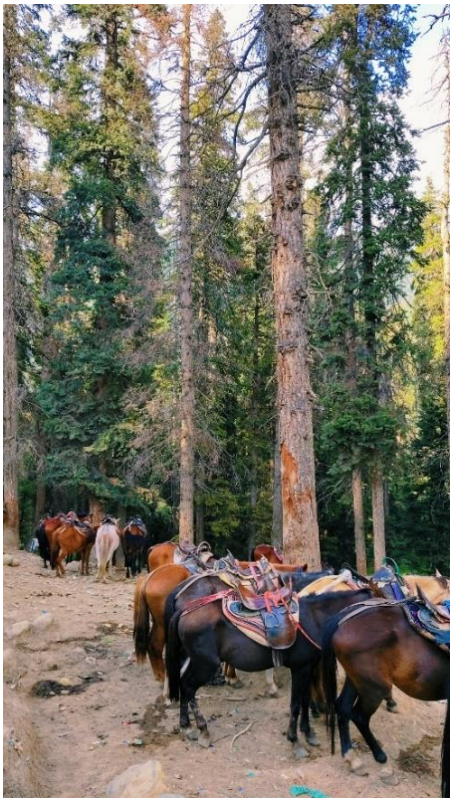

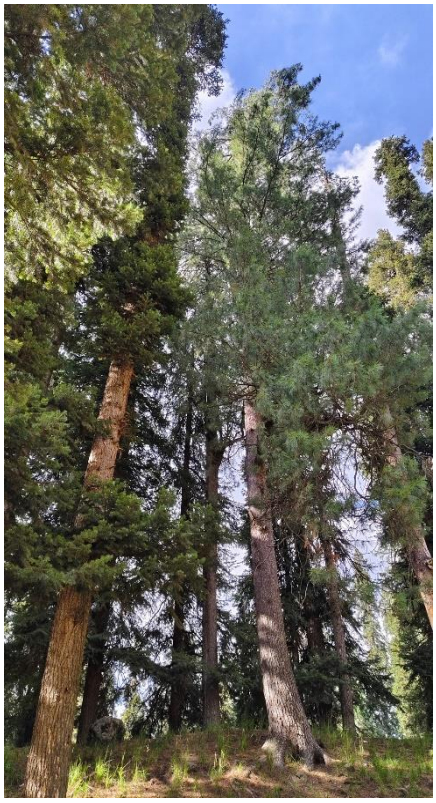

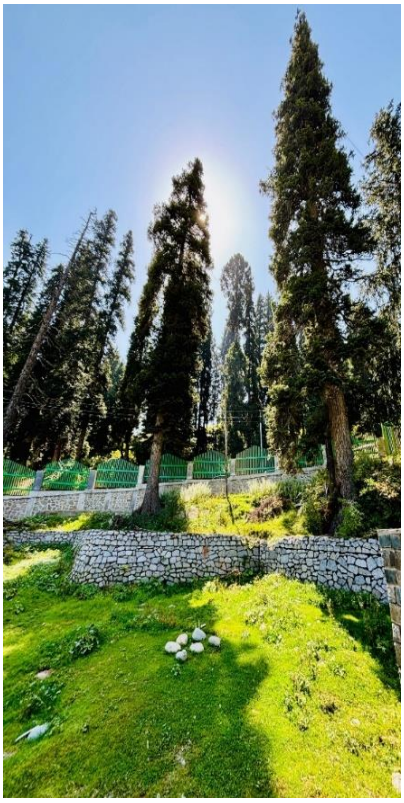

5. डल झील – श्रीनगर का दिल

ऐतिहासिक अवलोकन

पुरानी किताबों और मुगल रिकॉर्ड में इसका ज़िक्र है। जहाँगीर और शाहजहाँ जैसे बादशाहों की पसंदीदा जगह, जिन्होंने इसके किनारों पर बगीचे बनवाए थे। ब्रिटिश राज के दौरान, हाउसबोट का रिवाज शुरू हुआ।

अभी की हालत

टूरिस्ट हब: हाउसबोट, शिकारा राइड और फ्लोटिंग मार्केट के लिए मशहूर।

इकोलॉजिकल चुनौतियाँ: प्रदूषण और कब्ज़े का सामना करना पड़ता है, हालाँकि बचाव की कोशिशें जारी हैं।

यात्रा अनुभव

डल झील में क्रूज़िंग करना ऐसा लगा जैसे समय में रुकी हुई दुनिया में आ गए हों। पानी पर हिमालय के नज़ारे, फ्लोटिंग मार्केट और हाउसबोट की मेहमाननवाज़ी ने सच में एक ज़बरदस्त कश्मीरी एक्सपीरियंस दिया।

6. शंकराचार्य मंदिर, श्रीनगर – एक स्पिरिचुअल जगह

ऐतिहासिक अवलोकन

शंकराचार्य पहाड़ी पर बना यह पुराना मंदिर 9वीं सदी का है। आदि शंकराचार्य से जुड़ा है, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने यहां ध्यान किया था। बौद्ध और फ़ारसी कल्चरल लेयर्स से भी जुड़ा है, जो कश्मीर की अलग-अलग तरह की विरासत को दिखाता है।

अभी की स्थिति

तीर्थस्थल: खास शिव मंदिर, खासकर महाशिवरात्रि के दौरान।

टूरिस्ट अट्रैक्शन: श्रीनगर और डल झील के शानदार नज़ारे दिखाता है।

बचाने की कोशिशें: एक कल्चरल स्मारक के तौर पर अच्छी तरह से मेंटेन और सुरक्षित।

यात्रा अनुभव

मंदिर पर चढ़ना एक स्पिरिचुअल और फिजिकल दोनों तरह का सफ़र था। चोटी पर शांति और ऊपर से डल झील का नज़ारा कश्मीर की सुंदरता और स्पिरिचुअलिटी की एक गहरी छाप छोड़ता था।

चिनार का पेड़: चिनार का पेड़ अब जम्मू और कश्मीर का राज्य वृक्ष है और जम्मू और कश्मीर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान में गहराई से जुड़ा हुआ है। यह कश्मीर की एकशानदार निशानी है, अपने तेज़ पतझड़ के रंगों के लिए मशहूर है जो

बहुत सारे आगंतुकों को आकर्षित करते हैं और यह पेड़ 30 मीटर तक लंबा और बहुत मोटा हो सकता है।

निष्कर्ष

लाल चौक, गुलमर्ग, पहलगाम, डल झील, शंकराचार्य मंदिर और अनंतनाग मंदिर की यह यात्रा कश्मीर के इतिहास, संस्कृति, प्रकृति और मज़बूती में एक गहरी डुबकी थी। हर जगह घाटी के एक अलग पहलू को दिखाती है—राजनीतिक विरासत और कॉलोनियल आकर्षण से लेकर धार्मिक भक्ति और प्राकृतिक शान तक।

अनंतनाग मंदिर, हालांकि कम जाना जाता है, कश्मीर के नज़ारों में मौजूद आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गहराई की एक शांत लेकिन शक्तिशाली याद दिलाता है। इसकी शांत जगह और ऐतिहासिक महत्व को और ज़्यादा पहचान और संरक्षण मिलना चाहिए।

कश्मीर की अपनी मूल पहचान बनाए रखते हुए विकसित होने की क्षमता इसके लोगों की ताकत और जज़्बे का सबूत है।

यह इलाका सिर्फ़ टूरिस्ट के लिए एक गंतव्य ही नहीं है, बल्कि भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक समृद्धि का एक जीता-जागता म्यूज़ियम है।

डॉ. संतोष कुमार बी.
कुलसचिव

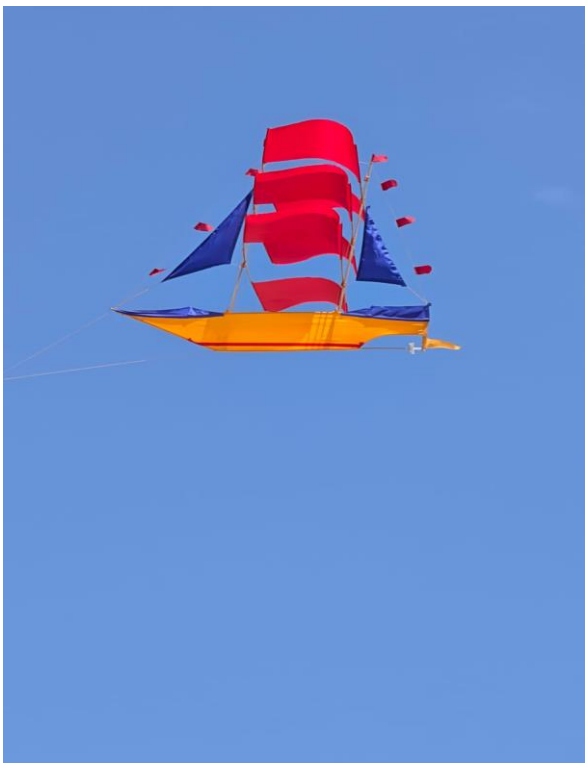

श्री नागेश डी. एस. वैज्ञानिक 'जी' (वरिष्ठ श्रेणी)
[बाह्य शारीरिक उपकरण विभाग]

श्री नागेश डी. एस. वैज्ञानिक 'जी' (वरिष्ठ श्रेणी)
[बाह्य शारीरिक उपकरण विभाग]

समय सहेजा हुआ: लेंस के माध्यम से वर्षों की यात्रा

पंद्रह वर्ष पूर्व का एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी.

एस.सी.टी.आई.एम.एस.टी. – नवीनतम संवर्धन: पीएमएसएसवाई ब्लॉक

श्री अजीश चंद्रन [कार्यकारी सहायक – क]

नीले गगन के तले धरती का प्यार पले

श्री अजीश चंद्रन [कार्यकारी सहायक – क]

श्री सजिन राज आर.जी. (तकनीकी सहायक-उपकरण-बी) [सिरेमिक कोटिंग सुविधा]

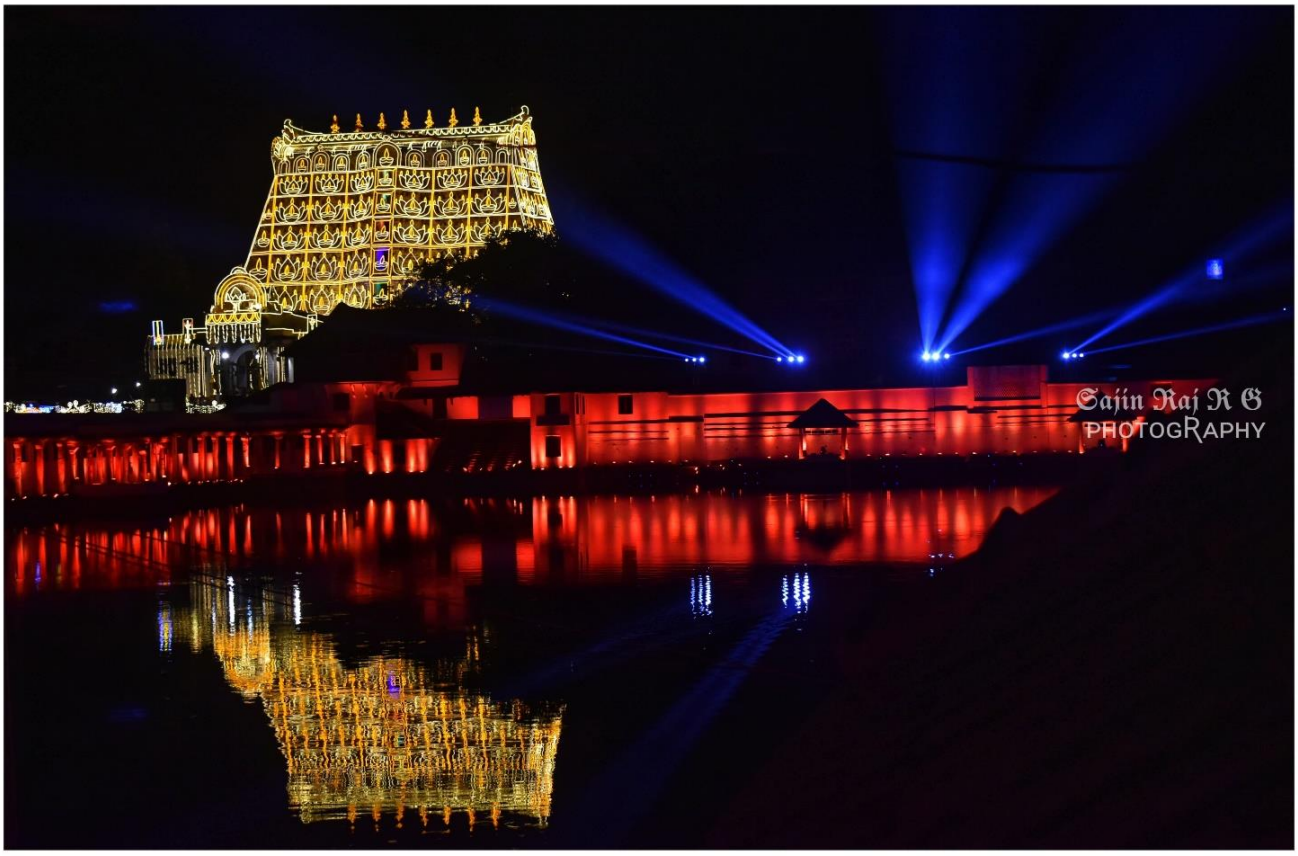

श्री सजिन राज आर.जी. (तकनीकी सहायक-उपकरण-बी) [सिरेमिक कोटिंग सुविधा]

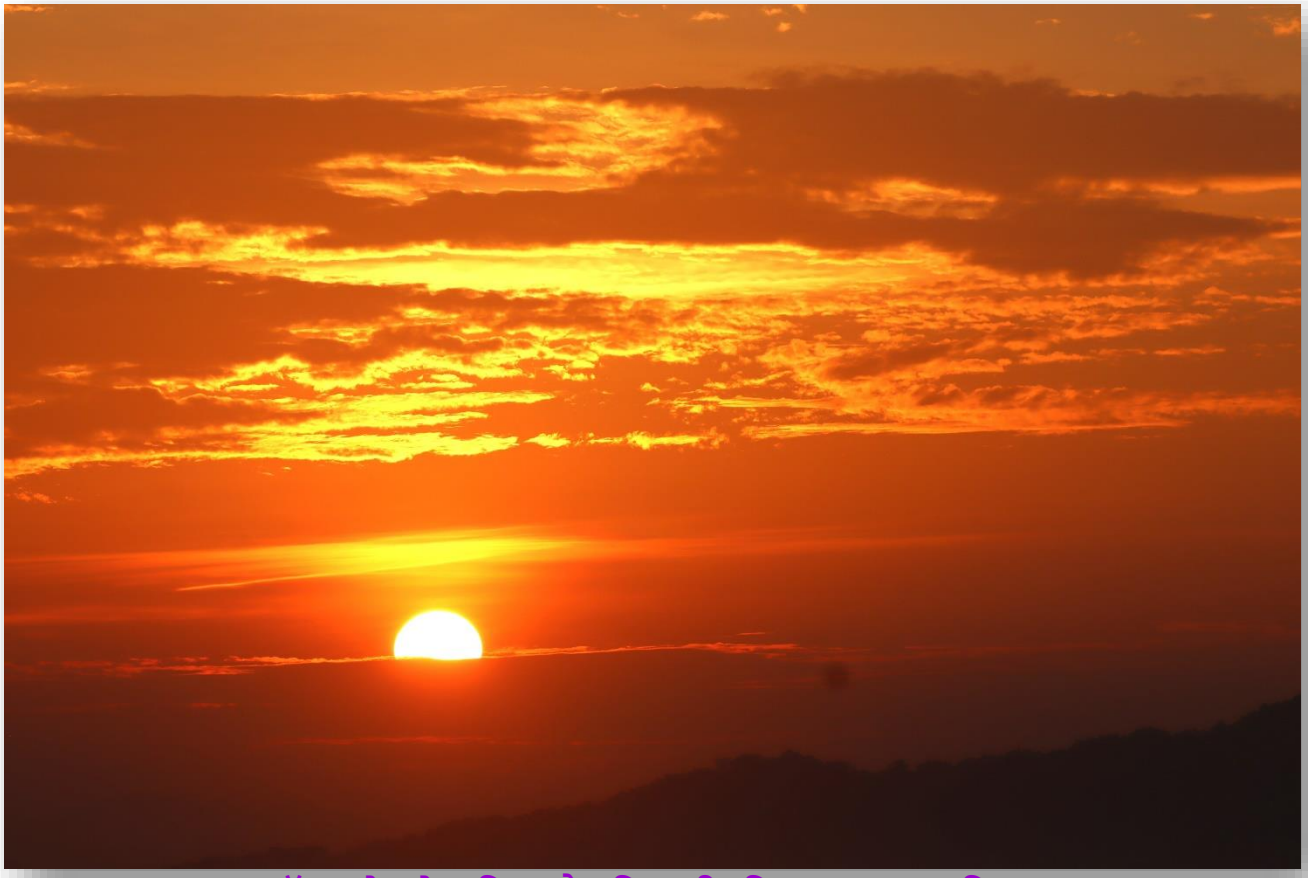

डॉ.कमलेश के गुलिया, वैज्ञानिक जी, [निद्रा अनुसन्धान विभाग]

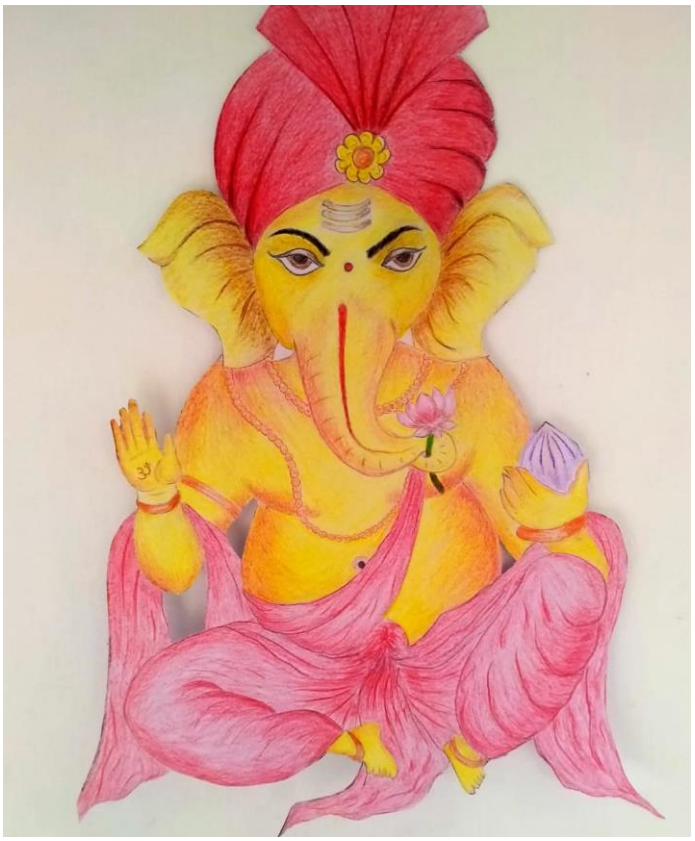

श्री उन्नीकृष्णन नायर जी
(टेक्नीशियन (फिटर) – बी)

कथकली के रंग और पात्र: प्रतीकों के माध्यम से व्यक्तित्व की पहचान

कथकली के प्रमुख पात्र एवं उनके स्वरूप केरल की पारंपरिक नृत्य-नाट्य शैली कथकली अपनी भव्य वेशभूषा, अलंकृत मुखाभिनय और रंगों के प्रतीकात्मक प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है। इसमें पात्रों की पहचान उनके चेहरे के रंग, मेकअप और मुकुट से तुरंत हो जाती है। प्रत्येक रंग किसी न किसी गुण—जैसे सद्गुण, अहंकार, दानवी प्रवृत्ति या शांति—का प्रतिनिधित्व करता है।

पच्चा (हरा) – आदर्श एवं वीर पात्रपाचा वर्ग के पात्रों का चेहरा चमकीले हरे रंग से सजाया जाता है, जो सत्य, साहस और नैतिकता का प्रतीक है। इस श्रेणी में प्रायः देवतुल्य और नायक पात्र आते हैं, जैसे श्रीकृष्ण और अर्जुन। ये पात्र धर्म और आदर्शों की स्थापना का संदेश देते हैं।

करि (काला) – राक्षसी प्रवृत्ति
करि वर्ग में काले रंग का प्रयोग किया जाता है, जो अंधकार, भय और दानवी शक्तियों का प्रतीक है। ये पात्र प्रायः राक्षसों या अत्यंत दुष्ट व्यक्तित्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं और कथा में संघर्ष का वातावरण बनाते हैं।

थाड़ी (दाढ़ी) – उग्र और शक्तिशाली पात्र
थाड़ी पात्रों में विभिन्न रंगों की दाढ़ियाँ होती हैं - जैसे लाल, सफेद या काली—जो उनके स्वभाव को दर्शाती हैं।

लाल दाढ़ी: अत्यधिक क्रोध और आक्रामकता
सफेद दाढ़ी: अलौकिक शक्ति और वीरता
काली दाढ़ी: वन्य और असभ्य प्रवृत्ति ये पात्र सामान्यतः युद्धप्रिय और अत्यंत बलशाली होते हैं।

कत्ती (चाकू) – अभिमानी और दुष्ट नायक
कत्ती पात्रों का आधार हरा होता है, लेकिन चेहरे पर लाल चाकू जैसी आकृतियाँ बनी होती हैं। यह उनके भीतर मौजूद वीरता और क्रूरता के मिश्रण को दर्शाता है। ऐसे पात्र अक्सर अहंकारी और शक्ति-लोलुप होते हैं, जैसे दुर्योधन।

कथकली भारत के केरल राज्य की 400 साल पुरानी शास्त्रीय नृत्य-नाट्य कला है, जो अपने विस्तृत मेकअप, वेशभूषा और शैलीबद्ध हाव-भाव के लिए प्रसिद्ध है। यह रामायण और महाभारत जैसे हिंदू महाकाव्यों की कहानियों को दर्शाने के लिए कथावाचन, संगीत और मूक अभिनय का संयोजन करती है। इस कला में कोई संवाद नहीं होता, इसलिए कलाकार चेहरे के भावों (नवरस) और मुद्राओं (हाथ के इशारों) के माध्यम से संवाद करते हैं।

Sajin Raj R G
PHOTOGRAPHY

Sajin Raj R G
PHOTOGRAPHY

Sajin Raj R G
PHOTOGRAPHY

Sajin Raj R G
PHOTOGRAPHY

मिनुक्कु – कोमल एवं शांत पात्रमिनुक्कु का अर्थ है "मृदु चमक।" इस शैली में हल्के, प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। इसमें स्त्री पात्र, संत, ऋषि और शांत स्वभाव वाले चरित्र शामिल होते हैं, जो सौम्यता और आध्यात्मिकता का प्रतीक हैं।

निष्कर्ष: कथकली में मेकअप केवल सजावट नहीं, बल्कि एक दृश्य भाषा है, जिसके माध्यम से दर्शक पात्र के स्वभाव को तुरंत समझ लेते हैं। इसकी कथाएँ मुख्यतः रामायण और महाभारत जैसे महान भारतीय महाकाव्यों से ली गई हैं, जो इस कला को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गहराई प्रदान करती हैं।

लेख सौजन्य: डिंपल गोपी (डॉ) [पुस्तकालय-सह-दस्तावेजीकरण अधिकारी - बी] और सजिन राज आर.जी.; फोटोग्राफी सौजन्य - सजिन राज आर.जी. [तकनीकी सहायक-उपकरण-बी] सिरेमिक कोटिंग सुविधा

सीटीआरसी (चित्रा टेक रिक्रिएशन क्लब): बीएमटी विंग की सांस्कृतिक चेतना

चित्रा टेक रिक्रिएशन क्लब, बीएमटी विंग में कार्यरत, वर्ष 1983 में स्थापित एक सक्रिय सांस्कृतिक एवं मनोरंजन संगठन है। यह क्लब बीएमटी विंग के कर्मचारियों एवं छात्र समुदाय का एक सशक्त सांस्कृतिक समूह है, जो आपसी सौहार्द, स्वास्थ्य एवं सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देता है। बीएमटी विंग के सभी कर्मचारी तथा छात्र इस क्लब के सदस्य हैं। सीटीआरसी ने अपने दीर्घकालिक कार्यकाल में व्यावसायिक दायित्वों के साथ मनोरंजन, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में योगदान

डॉ. प्रशांत कुमार दाश एवं उनकी टीम द्वारा सीपीआर एवं प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

क्लब द्वारा समय-समय पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाता है, जिनमें सदस्यों की सराहनीय भागीदारी देखने को मिलती है।

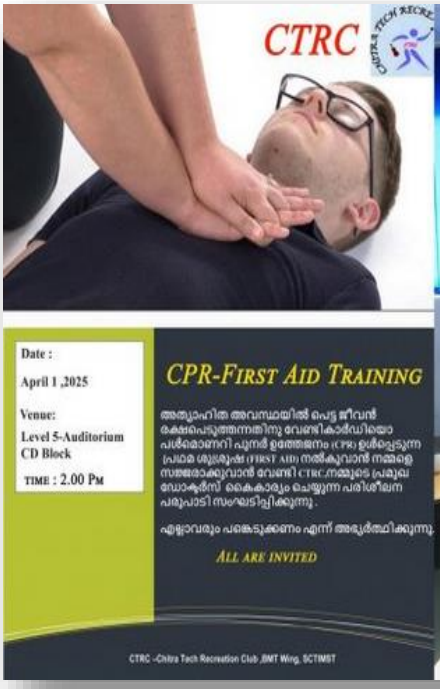

चित्रा टेक रिक्रिएशन क्लब (सीटीआरसी) का गावी के लिए एक दिवसीय भ्रमण

चित्रा टेक रिक्रिएशन क्लब (सीटीआरसी) द्वारा **गावी** के लिए एक दिवसीय मनोरंजक भ्रमण का आयोजन किया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य सदस्यों को व्यस्त कार्य-सारणी से कुछ समय निकालकर प्रकृति के सान्निध्य में विश्राम एवं तरोताज़गी का अवसर प्रदान करना था। इस यात्रा के लिए केएसआरटीसी बस की व्यवस्था की गई थी, जिसके माध्यम से प्रतिभागियों ने पठानमथिट्टा से गावी तक सुविधाजनक और आरामदायक यात्रा की। यात्रा के दौरान घने वन, पहाड़ियाँ और हरियाली से भरपूर प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोहारी रहे, जिसने पूरे दिन के लिए आनंदमय वातावरण तैयार कर दिया।